प्रकाशक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी बुकडिपो
बनारस सिटी

तृतीय संस्करण

१००० प्रति, मूल्य — ‡=) ।।)

मुद्रक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस
काशी

संपादकीय

'हम्मीर-हठ' हिंदी के खडकाव्यों में बहुत प्रौढ रचना है। भाषा पर लेखक का पूर्ण अधिकार है, वह सानुप्रासिक होते हुए भी स्वाभाविक और चलती है। ऐसी गठी हुई भाषा लिखने मे हिंदी के बहुत कम कवि सफल हुए हैं। पदावली का विधान करने में कवि ने रसो और भावों का ध्यान बराबर रखा है, कोमल भावो के साथ भाषा की पदावली कोमल है और उग्र भावों के प्रसग में पदविन्यास ओजपूर्ण है। आगे चलकर कवियों ने जैसी अव्यवस्थित भाषा का प्रयोग किया वैसो अस्वाभाविक भाषा के दर्शन 'हम्मीर-हठ' मे कहीं भी नहीं होते। भावो का निरूपण करने में भी कवि ने बडी प्रवीणता दिखलाई है, पात्रों के अनुकूल ही भावों की भी व्यजना है। केवल वस्तु के विधान मे कवि ने एक त्रुटि अवश्य की है। हम्मीरदेव के प्रतिद्वद्वी अलाउद्दीन में उस शौर्य की प्रतिष्ठा नहीं की गई है जिस शौर्य का प्रतिष्ठा ऐसे वीर के प्रतिनायक में होनी आवश्यक थी। वह बेचारा महल मे एक चुहिया के फुदुकने मात्र से डर जाता है और भाग खडा होता है। पर इसका कारण यह है कि चंद्रशेखरजी ने प्राचीन काल से चली आती हुई बात को बदलने की चेष्टा नहीं की। रासोकाल से वीरकाव्यों में जिस प्रकार शृंगार और वीर की मिली हुई धारा चली आ रही थी और जिसका अनुकरण अन्य हम्मीर-काव्य के लेखकों ने भी किया था, उसे इन्होंने ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है। फिर भी कवि को उसके परिवर्तित करने का पूर्ण स्वतंत्रता था। ऐसा न करना एक प्रकार का दोष हो है। कथा के मध्य में आनेवाले प्रसंगो का वर्णन कवि ने बडी सुंदरता के साथ किया है, कहीं भी अनावश्यक विस्तार या अरुचिकर बातो का सन्निवेश नहीं है।

  

प्रस्तुत संस्करण का संपादन करने के लिये हमें रत्नाकरजी के संस्करण के अतिरिक्त और कोई हस्तलिखित प्रति नहीं प्राप्त हुई, इसलिये पाठों का जो रूप हमें रत्नाकरजी के संस्करण में मिला उसी से संतोष करना पड़ा। किंतु टिप्पणी लिखते समय हमने यथाशक्ति सभी शब्दों का अर्थ लगाने की चेष्टा की है। मुसलमानी जमाने में होने के कारण कवि ने बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो अब साधारणतया प्रयोग में नहीं आते। कुछ स्थल एकदम अस्पष्ट हैं, पर ऐसे स्थल वे ही हैं जिनका पाठ रत्नाकरजी ने प्रति के दूषित होने के कारण अस्पष्ट कहकर छोड़ दिया है। इस पुस्तक का संपादन करने में हमने रत्नाकरजी की बातें ज्यों की त्यों रहने दी हैं, केवल उनकी पद्धति पर शब्दों के रूपों में अपेक्षित परिवर्तन कर दिया गया है। यह पुस्तक अब विद्यार्थियों के काम में भी आने लगी है, इसलिये हमने टिप्पणियों में कुछ ऐसे शब्दों का भी अर्थ दे देना आवश्यक समझा जिनका अर्थ देने की साधारणतया कोई आवश्यकता नहीं थी।

'उपक्रम' में रत्नाकरजी ने कवि के विषय में सभी मोटी-मोटी बातें कह दी हैं, इसलिये हमने अलग दूसरी भूमिका लिखने की आवश्यकता नहीं समझी। यदि आगे चलकर इसकी आवश्यकता पड़ेगी तो वह अगले संस्करण में जोड़ दी जायगी। अंत में हम आशा करते हैं कि यह संस्करण सब प्रकार से विद्यार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।'

पौष, १९९०
ब्रह्मनाल, काशी।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

उपक्रम

प्रिय पाठकगण !

आज मुझे वास्तविक मे बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई कि सर्व-शक्तिमान् जगदीश्वर के अनुग्रह से ऐसा अवसर उपस्थित हुआ कि 'हम्मीर-हठ' की पुस्तक पूरी करके आप लोगो के कर-कमलो मे अर्पित कर सका। भाषा-काव्य में शृङ्गार के तो अनेक ग्रन्थ छप भी चुके हैं और छपते भी जाते हैं परन्तु वीररस के ग्रन्थों का तो एक प्रकार से अभाव ही समझा जा सकता है। इससे यह नही कहा जा सकता कि हमारी मातृभाषा के कवियो ने इस अत्यावश्यक रस का काव्य किया ही नहीं, वरन् इसका मुख्य कारण यह जान पड़ता है कि शृङ्गार की ओर लोगो की रुचि अधिक होने के कारण विशेष प्रचार उसी रस के ग्रन्थों का हुआ। इसमें सन्देह नही कि शृङ्गार के ग्रन्थ वीरादि रस-प्रधान ग्रन्थों की अपेक्षा हैं भी अधिक और एतावता सुलभ भी हैं, परन्तु यह बात भी हम अवश्य कहेंगे कि खोज करने से वीरादि रस के भी उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्राप्त हो सकते हैं। जैसे एक दूसरे कवि का बनाया हुआ भी 'हम्मीर-हठ', 'भूषण-हजारा' ('भूषण' कवि-कृत जिससे कि शिवाजी के समय की बहुत-सी ऐतिहासिक बातें ज्ञात होती हैं) और फरुख्स्यिर बादशाह के समय की लड़ाई का वर्णन ('श्रीधर कवि-कृत) इत्यादि

ग्रन्थ मैंने स्वयं देखे हैं और यदि आप लोगों की रुचि उस ओर देखूँगा तो समयानुसार उनके प्रकाश करने का भी यत्न करूँगा। इसी प्रकार मुझको आशा है कि यदि हमारे देश के लोग खोज करें तो अनेक गुप्त रत्नों का प्राप्त होना असम्भव नहीं है।

इतिहास

इस ग्रन्थ में हम्मीरदेव, रणथम्भगढ़ (जो कि जयपुर के निकट है) के राजा तथा अलाउद्दीन बादशाह की लड़ाई का वर्णन है। इतिहास में इस लड़ाई के विषय में यह लिखा है कि अलाउद्दीन पादशाह का एक सरदार मीर मुहम्मद मङ्गोल नामक भागकर हम्मीरदेव की शरण में चला गया था। पादशाह ने राजा से अपना अपराधी माँगा, पर राजा ने शरणागत का परित्याग न किया। इसपर पादशाह ने सन् १३०० ई० में चढ़ाई की और रणथम्भगढ़ को जय कर लिया। जब पादशाह जय कर चुका तो उसने देखा कि मीर मुहम्मद भी घायल होकर खेत में पड़ा है। पादशाह ने उससे पूछा कि यदि इस समय हम तुमको उठवा ले चल कर औषधि करें तो तुम अच्छे होकर हमसे क्या बर्ताव करोगे? मङ्गोल ने उत्तर दिया कि हम तुम्हारा सिर काटकर हम्मीर वीर के राजकुमार को दिल्ली के सिंहासन पर बैठावेंगे। यह सुनकर अलाउद्दीन ने उसको हाथी से कुचलवा दिया।

इस ग्रन्थ के और इतिहास के वृत्तान्त से इतना विरोध पड़ता है कि इतिहास में तो लिखा है कि पादशाह ने हम्मीर को जीत लिया और वह लड़ाई में मारा गया और इस पुस्तक से यह जाना जाता है कि हम्मीरदेव ने लड़ाई में पादशाह को भगा दिया और गढ़ में लौट आने पर भ्रान्ति-वश स्त्रियों का

आत्मघात करना ज्ञात करके उसने स्वयं अपना सीस काट डाला। उस समय के इतिहास लिखनेवाले विशेषत मुसलमान ही थे, फिर क्या आश्चर्य्य है कि उन लोगो ने अपने स्वभावानुसार अपने पादशाह को एक हिन्दू राजा के आगे से संग्राम में भागने के कलङ्क से बचाने के हेतु एक मनमानी कहानी बनाकर लिख दी हो।

इसमे सन्देह नहीं कि इस प्रकार का दोषारोप इस ग्रन्थ के कर्त्ता कविजी पर भी हो सकता है कि इन्होंने हिन्दू राजा की कीर्त्ति बढ़ाने के लिये सच्चे वृत्तान्त को बदलकर कुछ-का-कुछ लिख दिया है। परन्तु उन्होंने इसकी रचना एक प्राचीन चित्रावली केअनुसार की है, जिसको कि मैंने स्वयं पञ्जाब-यात्रा के समय महाराज साहब बहादुर पटियाला के 'सरस्वती-भवन' में देखा। यदि चित्र खीचनेवाले को यह दोष लगाया जाय तो लग सकता है।

पटियाले के पुस्तकालय में सम्वत् १८५५ का बना हुआ एक 'हम्मीर-हठ' जोधराज कवि-कृत भी है। परन्तु मुझे बड़ा खेद है कि ऐसा अवसर न मिला कि मैं उसको आद्योपान्त देखूँ, एतावता मैं यह नही कह सकता कि इस विषय पर उसमें क्या लिखा है।

संस्कृत में जो 'हम्मीर-महाकाव्य' नामक ग्रन्थ है, उससे और इस ग्रन्थ से कई बातो में भेद पड़ता है। हम्मीर के मारे जाने के विषय में वह इतिहास के अनुकूल है।

कविता

इस ग्रन्थ की कविता बड़ी मनोहर और उमङ्गवर्द्धिनी है। ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुण अपने-अपने स्थान पर

सुशोभित हैं। कवि की प्रौढ़ता अक्षरों से प्रगट होती है। बहुधा कवियों के काव्य में भोंडापन आ जाता है, इस दूषण से भी यह ग्रन्थ रहित है। किस अवसर पर कैसे अर्थ का साधन किन शब्दों के द्वारा करना उचित है, इस बात पर कविजी ने ध्यान रक्खा है और कृतकार्य भी हुए हैं, जैसे कि मीर मुहम्मद के वचन सुनने के उपरान्त हम्मीर के उत्साह प्रगट करने के हेतु इस दोहे ("भुज फरकत हरषत सुनत, सरनागत की बात। बोले बिहँसि हमीर तब, उमँग न गात समात॥") से बढ़कर और क्या कहा जा सकता है। क्षत्री-जातीय वीरता इससे टपकी पड़ती है। इसी प्रकार मन्त्रियों के समझाने पर जो उत्तर हम्मीर ने दिया ("धड़ नच्चै लोहू बहै, परि बोलै सिर बोल। कटि-कटि तन रन मैं परै, तौ नहि देहुँ मँगोल॥") इसमें शरणागत की रक्षा करने की टेक और प्रान को धर्मपालन के हेतु कोई वस्तु न समझना, इन बातों को कैसी दृढ़ता से कवि ने प्रकाश किया है। युद्ध का वर्णन कवि ने उत्तम रीति से किया है। "बद्दल समान मुगलद्दल उड़े फिरै" बहुत ही प्रबल पद है। जहाँ हम्मीर के बाहर निकलकर लड़ने का वर्णन है, लड़ाई का एक चित्र-सा खींच दिया है। अन्त में शान्तरस की उदासी का चित्र भी बहुत अच्छी तरह खींचा है।

छन्द भी कविजी जहाँ-तहाँ बदलते जाते हैं, जिससे दो कार्य-साधन होते हैं। प्रथम तो यह कि पढ़नेवाला नये-नये छन्दों के कारण उकताता नहीं और दूसरे यह कि बहुधा जहाँ जो उचित है वहाँ वह छन्द इस अदल-बदल में पड़ जाता है।

इतना कविता की ओर ध्यान दिलाने के हेतु लिख दिया गया, विशेष गुण-दोष पाठक लोग स्वयं ध्यान से विचार सकते हैं।

कविजी का संक्षिप्त जीवनचरित्र

इस 'हम्मीर-हठ' के रचयिता पण्डित चन्द्रशेखरजी वाजपेयी मिति पौष शुक्ल १० सम्वत् १८५५ वि० को मौजवाबाद ज़िला फतहपुर में (असनी के निकट) उत्पन्न हुए थे। इनके पिता पण्डित मनीरामजी वाजपेयी भी अच्छे कवि थे। इनके वंश मे काव्य की चर्चा कई पीढियों से चली आती है। पहिले इनके वंश की आजीविका हुण्डी इत्यादि की थी, कविता केवल मन के उत्साह से की जाती थी, पर हंसरामजी के समय से जो कि श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजी के कृपापात्र थे, यही जीविका हो गई। पण्डित चन्द्रशेखरजी भाषा-काव्य में असनी-निवासी करनेश महापात्र* के शिष्य थे। १० वर्ष की अवस्था में यह उनके पास बैठाये गये थे। हमारे कविजी संस्कृत के भी पण्डित थे, पर उनके संस्कृत के गुरु का नाम नहीं मालूम।

विद्याध्ययन करने के पश्चात् यह महाशय १२ वर्ष की अवस्था में देशाटन करने के निमित्त घर से चले। उस समय इनके पिता जीवित थे और घर में भगवत-भजन करते थे। पहले चन्द्रशेखरजी दर्भङ्गा की ओर गये और उस प्रान्त के राज-दरबारों मे यथोचित प्रतिष्ठा पायी।

सात वर्ष के अनुमान उसी प्रदेश मे रहे फिर० २६ वर्ष की अवस्था में जोधपुर गये। उस समय वहाँ महाराज मानसिंह सिंहासन पर थे, उनकी सभा में अच्छे-अच्छे बावन कवि उपस्थित थे। यह महाशय बाँकीराम दान चारण के द्वारा दरबार मे पहुँचे और यह कवित्त पढा—

---

* महापात्र से महाब्राह्मण न समझना चाहिए। बादशाह की दी हुई उपाधि है जो कि फ़ारसी शब्द "आमोजर्फ" का उल्था है।

"द्वादस कला सों मारतंड ये उवैगे चंड,
सेसवारी साँसनि समस्त सत्रु जलिहै।
छूटि जैहै अचल अवास अमरेसवारो,
कूट जैहै कहलि कती-सी भूमि हलिहै॥
'सेषर' कहत अलका मैं कलापात ह्वैहै,
पावक पिनाकी के त्रिसूल सों निकलिहै।
तू न तानि भौहैं भानवंसी भूप मान ना तो,
जानि लैहै प्रलय पयोधि फूटि चलिहै।

महाराज ने प्रसन्न होकर सौ रुपया महीना उनका कर दिया और वह ६ वर्ष तक वहीं बड़ी प्रतिष्ठापूर्वक रहे, फिर महाराज मानसिंह के स्वर्गवास होने के पश्चात् जब महाराज तख्तसिंह गद्दी पर बैठे तो उन्होंने किफ़ायत करना आरम्भ किया और सबकी तनखाहें आधी कर दीं। कविजी को आधी तनखाह पर रहना स्वीकृत न हुआ और वहाँ से लाहौर की ओर महाराज रणजीतसिंह के पास चले।

अन्न-जल के हाथ बात है, पटियाले में पहुँचकर सरदार जयसिंह सयानी (वर्त्तमान सरदार सुजानसिंह कुँअरजी साहब ड्योढ़ीवाले के पिता) तथा सरदार खुशहालसिंहजी (वर्त्तमान सरदार प्रतापसिंहजी के पितामह) के द्वारा श्रीमहाराज कर्मसिंहजी पटियालाधिपति के दरबार में पहुँचे। इनकी कविता से महाराज साहब बहुत प्रसन्न हुए और पाँच रसद पक्की इनके वास्ते कर दी। इसके सिवा सवारी इत्यादि का प्रबन्ध ऊपर से कर दिया। फिर तो यह कविजी वहीं रह गये और वहाँ की प्रतिष्ठा के आगे जोधपुर के सौ रुपये भूल गये। यहाँ तक कि जोधपुर से लाड़िलीदास मुंशी महाराज तख्तसिंह के भेजे हुए इनको बुलाने भी आये और कहा कि

आप चलिये आपकी तनख्वाह आधी न की जायगी, पर इन्होंने पटियाले के सन्मान को छोड़कर जाना उचित न समझा। तब से लेकर अन्तकाल पर्यन्त पटियाले ही में रहे। कभी-कभी छुट्टी लेकर वृन्दावन जाया करते थे, क्योंकि उनको वहीं का इष्ट था, "वृन्दावन-शतक" इन्होंने वृन्दावन ही में बनाया था। देहान्त इनका सम्वत् १९३२ में हुआ।

महाराजा कर्मसिंहजी की आज्ञानुसार इन्होंने एक नीति का वृहद् ग्रन्थ रचा। जब महाराज कर्मसिंहजी का देहान्त हुआ और उनका अस्थि-संचयन हो रहा था, उस समय ऐसे गुणग्राहक स्वामी के मरने के कारण यह बड़े विलाप से अश्रु-पात कर रहे थे और बड़े ही उदास और मलीन थे। महाराज नरेन्द्रसिंहजी ने उनकी यह दशा देखी और दरबार जाकर चोबदार से बुलवाकर कहा कि तुम उदास मत हो तुम्हारा वैसा ही आदर-सन्मान होता रहेगा। उस समय महाराज 'हम्मीर-हठ' की एक चित्रावली देख रहे थे, वह कविजी को देकर आज्ञा की कि तुम इसका वर्णन काव्य में बाँध लाओ। उसी आज्ञानुसार उन्होंने यह 'हम्मीर-हठ' रचा।

चन्द्रशेखरजी के बनाये हुए इतने ग्रन्थ हैं —हम्मीर-हठ, नखशिख, रसिक-विनोद, वृन्दावन-शतक, गुरु-पञ्चाशिका, ज्योतिष का ताजक, माधवी-वसन्त (बड़ा ग्रन्थ है), हरिभक्त-विलास (बड़ा ग्रन्थ है) और राजनीति का वृहद् ग्रन्थ (८००० श्लोक के अनुमान है)। इनमें से नखशिख तो 'भारतजीवन प्रेस' में मैं छपवा चुका हूँ और 'हम्मीर-हठ 'साहित्य-सुधा-निधि' में प्रकाशित हुआ। यदि यह दो ग्रन्थ आप लोगों को रुचैंगे तो और भी समयानुसार छप जायँगे।

इन कविजी के पुत्र पण्डित गौरीशङ्कर जी वाजपेयी पटि-

याले में वर्त्तमान हैं। यह महाशय बड़े प्रेमी और सुहृद हैं, कविता इनकी बहुत चोखी और रसीली होती है। जब मैं पटियाले गया था तो मुझसे इनसे प्रतिदिन घंटों सत्सङ्ग रहता था। इन्हींकी कृपा से मुझे चन्द्रशेखरजी के कई ग्रन्थ प्राप्त हुए और यह जीवन-चरित्र भी मुझे इन्ही से मिला, इसलिये मैं उनका चिरबाधित भी हूँ।

जगन्नाथदास (रत्नाकर) बी० ए०,
शिवालय घाट,
बनारस सिटी।

हम्मीर-हठ

(दोहा)

गिरिवरधर अरु गंगधर,-चरन-सरन सिर नाय।
या 'हमीर-हठ' की कथा, कहौ सबहि समुझाय ॥१॥
परसराम ध्रुव भुव अचल, अहि-फन पर जिमि पत्र।
श्रीनरेंद्र मृगराज नृप, तब लगि तव जस-छत्र ॥ २ ॥
श्रीनरेंद्र मृगपति नृपति, दिनप्रति दया-निधान।
दीन जानि कीनी कृपा, मो पर परम सुजान ॥ ३ ॥
निकट बोलि दीन्ह्यो हुकुम, यह 'हमीर-हठ' जौन।
छंद-बंद करिकै रचौ, कथा सोहावनि तौन ॥ ४ ॥
महाराज के हुकुम ते, जिहि विधि चित्र-चरित्र।
सो 'सेखर' भाषा करी, दूषन करेहु न मित्र ॥ ५ ॥
दक्खिन दिसि रनथंभगढ, तहँ हमीर चहुँआन।
महावीर रन-धीर तेहि, जानत सकल जहान ॥ ६ ॥
साह अलाउद्दीन इत, उत हमीर हठ धारि।
भयो रायसो दुहुन को, जेहि विधि सो निरधारि ॥७॥
देस दिलीपति दीनपति, दिल्ली-तखत-नसीन।
दूजो सूरज सो तपै, साह अलाउद्दीन ॥ ८ ॥
थरथर कंपै मेदिनी, रवि-रथ झंपै धूरि।
साह अलाउद्दीन जब, सहज चलत कछु दूरि ॥ ९ ॥
असी लक्ख दल-बल सजे, जिहिं दिसि देखत वंक।
तिहि दिसि कोप्यो काल जनु, होत राव सब रंक ॥१०॥

सो इक दिन महलनि गयो, जहाँ जनाने-खास।
सब हजूर हाजिर भईं, हरमैं सहित-खवास ॥ ११ ॥

(कवित्त)

थोरी-थोरी बैसवारी नवलकिसोरी सबै,
भोरी-भोरी बातनि बिहँसि मुख मोरतीं।
वसन बिभूपन बिराजत बिमल तन,
मदन-मरोरनि तरकि त्रिन तोरती ॥
प्यारे पातसाह के परम-अनुराग-रँगी,
चाय-भरी चायल चपल दृग जोरती।
काम-अबला-सी कलाधर की कला-सी
चारु चंपक-लता-सो चपला-सी चित्त चोरती ॥१२॥

बेगमोवाच—

(सोरठा)

आलिजाह इक बार, हम सबको लै साथ मै।
जंगल हरिन-सिकार, खेलौ ये अरजैं करो ॥१३॥

(दोहा)

अरजैं सुनि आयो बहुरि, पातसाह दरबार।
बरु विचारि मन मैं कियो, खेलौ और सिकार ॥१४॥
करि कनात ऊँची खड़ी, कानन के चहुँ ओर।
साज्यो साज सिकार को, पातसाह सिरमौर ॥ १५ ॥

(चौपाई)

सजे आप सुलतान सँभारी। सजो बेगमैं साज सिकारी ॥
रंग-रंग के सजे तुरंगा। कुल्लह समुद कुमैत सुरंगा ॥१६॥

अमित रंग बरनै को औरै । उड़त कुरंग-संग सब ठौरै ॥
सुबरन साज जीन जरदोजी । जगमगात तन अगनित ओजी ॥१७॥
साखत पेसबंद अरु पूजी । हीरन जटित हैकलैं दूजी ॥
कलँगी सड़क सेत गजगाहैं । लालनि जटित मंजु मुकता हैं ॥१८॥
अंग-अंग बर बने तुरंगा । चढे चाव मनु चपल कुरंगा ॥
बेगवंत बरजोर बखाने । सजि-सजि सकल साह-ढिग आने ॥१९॥

(कवित्त)

सुंदर सुसीले सब भाँतिन सजीले खुले,
थान तैं थमै न महि खंडत चलत है।
जोम-भरे जात यौं जकंदत जमत तुरी,
जंग मैं न मुरत मतंगनि मलत हैं ॥
चाय सो चपल चंचला से चमकत,
पातसाह के तुरंग जे कुरंगनि छलत है।
हुंकरत हीसत फवत फुंकरत,
फर-मंडल-मँझार दल दीरघ दलत हैं ॥२०॥

(दोहा)

मरदानी सब बेगमैं, आप सूर सुलतान।
हरषि तुरंगन पै चढ़े, गहि कर बान-कमान ॥ २१ ॥

(सवैया)

खेलि सिकार रही सिगरी सजि साह के संग तुरंग चढी ते।
स्याम सुरंग हरे पियरे पट मानहु दामिनि मेघ मढ़ी ते ॥
जेब जड़ाव के जेवर की उमगै अति अंग उमंग बढी ते।
सूरज की किरनैं मनो कोटिन मेघन के तन फोरि कढ़ी ते ॥२२॥

(कवित्त)

चंद की कला-सी विमला-सी चढी वाजिन पै,
बसन-विभूषन-वलित वर बैनी हैं।
किन्नरी नरी-सी जरी हेम की छरी-सी भरीं,
जोबन अनूप-रूप रति-सुखदैनी हैं॥
जोरति नयन चित चोरति पिया को मुख,
मोरति विहँसि चितवनि करि पैनी हैं।
जौनी ओर जाति बन-बीथिन मैं तौनी ओर,
हेरि-हेरि मारति मृगन मृगनैनी हैं॥२३॥

(झूलना)

लगो होन आखेट आरम्न माहीं,
छिड़े एक-तें-एक तुरंग तीखे।
करैं पौन के संग मैं गौन पूरे,
मनो वाज छूटे कला कोटि सीखे॥
चढी बेगमैं साह सुलतान साथैं,
सवै बैस थोरी बड़े रूप पीखे।
गहे बान कम्मान संसेर नेजे,
सुनी बात कानै लिखी आँख दीखे॥२४॥
कहूँ खींचि कम्मान को बान मारैं,
मृगा जात भागे लगी पूर छोटैं।
कहूँ खींचि संसेर कों फेरि घोड़ा,
करैं वार द्वै खंड ह्वै भूमि लोटैं॥
कहूँ मारि नेजा दिए डारि केते,
नही प्रान छूटैं परे झुंड ओटैं।

मनो जीव पापीन को जम्मराजा,
दियो दंड सोई सबै धूम घोटैं ॥२५॥

(कवित्त)

खेलत सिकार झारखंड मै अलाउद्दीन,
मारत मृगनि मृगनैनी लिए संग मै।
बेगम कहत मरहट्टी* माहताब जैसी,
जगत जुन्हाई जाके जोबन-तरंग मैं॥
देख्यो तिन तहाँ मीर महिमा मँगोल+ कहूँ,
काम तें सरस अभिराम रूप-रंग मै।
हाय मिलै कैसे या कराह मुख लागी,
दुख लाग्यो देन अमित अनंग अंग-अंग मैं॥२६॥
लाग्यो मन मीर सो न धीर धाग्यो जात उर,
भूली-सी फिरति दुख कासो कहै गात के।
चित्त चटपटी अटपटी सब बात घात,
बनत न एकौ जात बनत न लात के× ॥

* मरहट्ठी बेगम से यदि कमलादेवी समझें तो काल विरुद्ध पड़ता है, क्योंकि कमलादेवी रणथम्भगढ की लड़ाई के पश्चात् पकडी गयी थी। पर यह सम्भव है कि अलाउद्दीन जब पादशाह होने के पहिले दक्षिण गया था तब कोई सुन्दर मरहट्ठी स्त्री वहा से लाया रहा हो और उसे अपनी बेगम बना लिया हो।

+ अलाउद्दीन, मीर मुहम्मद मगोल नामी सरदार से अपनी बेगम से गुप्त व्यभिचार करने के सन्देह पर क्रुद्ध हो गया था। वह भागकर हम्मीरदेव की शरण में चला गया था और उसी के कारण लडाई हुई कवि उसी को महिमा मगोल के नाम से लिखता है।

× पैर को जाते नहीं बनता जैसे लोग कहते है, ओर को [अर्थात् आख से] देखन नहीं बनता या पाठ यदि 'ता तके रक्खा जाय तो यह अर्थ हो सकता है कि जाने नहीं बनता उस ओर देख रही है।

हेर्‍यो तहाँ हरिन कुलंग करि कूद्यो एक,
ताही समै सहसीक साहसन मातके।
तुरत तुरंग करि तातो ताहि ताजन दै,
फफकि फँदाय दियो बाहिर कनात के॥२७॥
हेरति फिरति हरिन को ज्यों हरिन-नैनी,
देख्यो महिमा मँगोल ताके पास जाय कै।
मारे दृग-बान तान भृकुटी कमान करि,
घायल निदान कहै नजर नचाय कै॥
येरे मीत मेरे मेरी पीर के हरनहार,
बार एक लीजै मोहि उर सों लगाय कै।
तपनि बुझाय दिल-दुख मिटि जाय नेक,
सुख सरसाय मिलि मोहि हरखाय कै॥२८॥

मीरोवाच—

(सवैया)

मीर कहै सुन तू मरहट्ठी भई कछु बावरी बोलति कैसी।
साहन को पतसाह बडो सुलतान प्रिया तिनकी तुम ऐसी॥
प्रीति करौ कि करौ कछु बैर विचारत जो यह बात अनैसी।
डारिहै मारि निकारिहै मोहिं कहूँ सुनिहै जो कही तुम जैसी॥२९॥

(दोहा)

मरहट्ठी पुनि यों कह्यो, सुनो मीर मंगोल।
पातसाह की नारि मैं, मेरे बचन अडोल॥ ३०॥

कै मेरो कहिवो करहु, कै अब होहु उदास।
बिन मेरे उर सों लगे, तुम्हैं न जीवन-आस ॥ ३१ ॥
यह सुनि मीर ससंक-चित, भरी बाम निज अंक।
सुख-मोटनि लूटन लगे, जनु पाई निधि रंक ॥ ३२ ॥
जुगल रसीले रस-बिबस, सुधि भूली सब और।
तब आयो तिनके निकट, सेर एक तिहि ठौर ॥ ३३ ॥
प्रेम-पास कर बँधि रह्यो, चलन न पायो वीर।
सेर सँघार्‌यो ठौर ही, मीर एक ही तीर ॥ ३४ ॥ *

(त्रिभंगी)

करिकै मनमाने, अति सुख-साने, जात न जाने, जाम-घरी।
उठिकै पुनि सारे, बसन सँवारे, भूषन धारे, रूपभरी ॥
लखि साज-समाजे, रति-पति लाजे, सस्तर साजे, भाँति भली।
मिलिकै निज मीतै, हय रनजीतै, चढ़ि बर भामिनि फेर चली ॥३५॥
चढ़िकै जब नट्टी, नार मरट्टी, मीर पलट्टी, बाग तहीं।
कहि सुनिए प्यारी, कौतुकवारी, बात न काहू पास कही ॥
सुनि हय मग डारे चाप सुधारे, होत सिकारे धूम जहाँ।
तिनसों मिलि डोलैं, करै कलोलैं, गरबित बोलैं, बाम जहाँ ॥३६॥

(सवैया)

खेलिकै साह सिकार मुर्‌यो हरसै सब साथ सुहात ललामैं।
खूब खुस्याल खुले हियरे करतीं हँसि हेरि करोरि कलामैं ॥
लै सुलतान कों मंदिर मैं अपनी-अपनी मिलि लागि गला मैं।
देत मसारखी बारहि बार करैं सिगरी सब ओर सलामैं ॥३७॥
सुंदर मंदिर मैं सिगरी मिलि सेज सजी सब भाँति सुहाई।
सोहै जहाँ सुलतान सिरोमनि साह सदा सबको सुखदाई ॥

*३१, ३२, ३४, ३५ पद्य में नेकलाल के कारण शुद्ध पाठ बदल दिया गया है।

गावति एक बजावति बीन प्रवीन लिए इक तास तहाँई।
बैठो बिनोद-भऱ्यो दिन-दूलह कंत दिली को दिमाग सवाई ॥३८॥

(चौपाई)

चहुँ दिसि करैं चँवर छबि-बाढ़ी। लीन्हे एक मोरछल ठाढी ॥
एकै हँसै हँसावै एकै। सहित-अदाब जाति ढिग एकै ॥ ३९ ॥
साहैं निरखि सबनि सुख ऐसे। चंदहिं निरखि चकोरहिं जैसें ॥
यहि बिधि सदा संग सब बामैं। पातसाह नित करत अरामैं॥४०॥
इक दिन साह अलाउद्दीन। सैन-सदन सोवत परवीन ॥
संग मरहठी बेगम सोवै। रति-पति-संग मनो रति होवै ॥४१॥
काम-कला प्रगटी उर सोवत। उठ्यो साह तिय को मुख जोवत ॥
जब आनंद सरस रस-पागे। निकस्यो एक सुमूषक आगे ॥४२॥*
खरभर सुनत भए उठि ठाढ़े। सिथिल सुअंग भंग सुख गाढे ॥
गहि कमान छाँडे सर चारि। मूस मारिकै दीन्ह्यो डारि॥४३॥

(दोहा)

हाजिर पास खवास जे, जे नाजिर सब धाम।
सब मिलि देत मुबारकी, झुकि-झुकि करैं सलाम॥४४॥
जियो बहादुर चारि जुग, साह अलाउद्दीन।
यह सुनिकै सनमुख हँसी, मरहट्ठी मतिहीन ॥ ४५ ॥
पातसाह पूछ्यो बहुरि, कहु हँसिबे को हेत।
हाथ जोरि परसत पगनि, प्रगट न उत्तर देत ॥ ४६ ॥
पातसाह जब हठ पऱ्यो, नैन तरेरे जान।
कह्यो आज पिय माफ करि, करिहौं अरज बिहान ॥४७॥

* ४२ वें अङ्क की तीसरी तुक और ४३ वें अङ्क की दूसरी तुक में भी पाठ बदल दिया गया है।

लिखि कागद कर मैं दियो, खोजा एक पठाय।
कहि महिमा मंगोल कों, भोर होत भजि जाय ॥४८॥

(सवैया)

नाजिर आनि दियो कर कागद आजु कही उठि देर न लावै।
खोल खलीतो लिख्यो यह बाँचत भाजियो राति न बीतन पावै॥
मीर तुरंग मँगाय तुरंत भयो असवार विचारत जावै।
जाउँ कहाँ केहि के ढिग मैं यहि औसर मैं मोहि कौन बचावै ॥४९॥

(कवित्त)

बाजी खुर-धारनि पहार करै छार, गढ़
गरद मिलावै जोर जंगन जकत है।
ल्यावै आसमान तें पताल तें पकरि, पारावार
तें कढ़ावै थाह लेत न थकत है॥
संक न करत लंकपति सों जुरत जंग,
जो हिकै जमात जम छोभनि छकत है॥
काल तें कराल या अलाउदीन पातसाह
ताको चोर चारों ओर राखि को सकत है॥५०॥

(सवैया)

सोचत मीर चलो मग जात लखै नहिं ठौर कहूँ सरने को।
जाउँ जहाँ जिहि के ढिग सो न सकै छिन राखि डरै लरने को॥
एक यहै रनथंभ को खंभ अहै चहुँआन अजौ अरने को।
दंड भरै न हमीर हठी हर बार जुरै न मुरै मरने को॥ ५१ ॥

(दोहा)

तब आयो रनथंभ मैं, चलि महिमा मंगोल।
लखि रचना गढ़-कोट की, भयो अडोल अबोल॥ ५२ ॥

जब भीतर कौं पग दियो, तब बोले दरवान।
कित तें आए कौन तुम, उहाँ न पैहौ जान ॥ ५३ ॥

मीर मंगोलोवाच—

(भुजगप्रयात)

कहाँ धाम है बीर हम्मीर केरो।
उहाँ जाइबे को बड़ो काम मेरो ॥
अरे वीर मैं मीर मंगोल भाषौ।
बचैं प्रान मेरे उहाँ मोहिं राखौ ॥ ५४ ॥
सुनी प्रान के राखिबे की जु बानी।
दुरे आनि पीछे यही बात जानी ॥
गहे बाँह एकै मिले औ जुहारे।
कहैं पुन्य के पाहुने हौ हमारे ॥ ५५ ॥
लगे अंग एकै गए संग लागे।
जहाँ बीर हम्मीर के धाम आगे ॥
गए भूप के भौन मैं और दौरे।
तहाँ आनि आगे दुवौ हाथ जोरे ॥ ५६ ॥

दरवानोवाच—

(दोहा)

हिंद-धनी हिम्मत-धनी, हौ नृप समर-अडोल।
मीर सरन तेरी पर्‍यो, है महिमा मंगोल ॥ ५७ ॥
भूप बुलायो आप ढिग, तब आयो तहँ मीर।
हाथ जोरि ठाढ़ो भयो, बोलत बचन गँभीर ॥ ५८ ॥

मीरोवाच—

(सवैया)

बात बनी न कछू हमसो तेहि कारन तें सुलतान रिसाने।
डारिहै मारि बिचारि यहै तुरतै तिहि ठौरहिं छाँड़ि पराने॥
बीर बली चहुँआन सुनौ रनथंभ के थंभन आप बखाने।
प्रान के राखनहार निहारिकै आनि परे सरने सब जाने॥५९॥

(दोहा)

मैं आयो तेरी सरन, तू अब लेहि उबारि।
उभै लोक तेरो बिमल, जस गैहैं जुग चारि॥ ६० ॥
भुज फरकत हरषत सुनत, सरनागत की बात।
बोले बिहँसि हमीर तब, उमग न गात समात॥६१॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चंद प्रकासै।
उलटि गंग बरु बहै काम-रति-प्रीति बिनासै॥
तजै गौरि अरधंग, अचल ध्रुव-आसन चल्लै।
अचल पौन बरु होय, मेरु मंदर-गिरि-हल्लै॥
सुरतरु सुखाय लोमस मरै, मीर संक सब परिहरौ।
मुख-बचन बीर हम्मीर को, बोलि न यह बहुरो टरौ॥६२॥
खसै भानु-बिम्मान, बिकल तारा, ससि झंपै।
अचल अवनि असमान, दसौ दिसि थरथर कंपै॥
गज्जै घन घनघोर, जोर मारुत सब चल्लै।
संकरगन फुंकरै, काल हुंकरै उनल्लै॥

मरजाद छोड़ि सागर चलै, कहि हमीर परलै करन।
आलाउदीन पावै न तउ, मैं मँगोल राख्यो सरन ॥६३॥

(दोहा)

मंत्री बहुरि मुसाहिबनि, बहुत कह्यो समुझाय।
पै हमीर राख्यो सरन, सीस रहै कै जाय ॥ ६४ ॥

राजोवाच—

(दोहा)

धड़ नच्चै लोहू बहै, परि बोलै सिर बोल।
कटि-कटि तन रन मैं परै, तउ नहिं देहुँ मँगोल ॥६५॥

(पुराना—दोहा)

"सिंह-गमन सुपुरुष-वचन, कदलि फलै इक बार।
तिरिया-तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार"* ॥

(पद्धरी)

यहि भाँति मीर महिमा मँगोल।
जब गयो भाजि सरनै अडोल ॥
तब पातसाह आलाउदीन।
पुनि रोज दूसरे खबर लीन ॥ ६६ ॥

---

* चन्द्रशेखरजी की प्रति में यह दोहा इसी भाँति लिखा है। पर इसके दोनों तुकान्त में 'बार' पड़ता है। बाबू हरिश्चन्द्र ने इस दोहे को यों छापा है—

"सिंह-सुवन सुपुरुष-वयन, कदलि फलै इस सार।
तिरिया तेल हमीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥"

पर इस पाठ में पहिले चरण के अन्त में 'इस सार' आता है। 'इस' शब्द पुरानी भाषा में प्रचलित कम था। पाठ में कुछ गड़बड़ अवश्य है। ['इस' के स्थान पर अब 'इक' पाठ प्रचलित है—म०]

बैठो इकंत इक ठौर जाय।
तहँ लीन तौन तरुनी बुलाय॥
तेहि आय तुरत कीन्ही सलाम।
अति रूपवंत मरहठी वाम॥ ६७॥
सनमुख निहारि पुनि नैन मोरि।
बैठी समीप जुग हाथ जोरि॥
जब रही और कोऊ न पास।
रहि गईं चारि हाजिर खवास॥६८॥
तब पातसाह तेहि ओर देखि।
वह बात बहुरि पूछी बिसेषि॥
अति चतुर आप आलाउद्दीन।
हँसि हेरि बैन बोले प्रवीन॥ ६९॥

पादशाहोवाच—

(पद्धरी)

सुनि नारि तोहिं पूछौं बहोरि।
तुम करत केलि मुख लियो मोरि॥
पुनि मोहि तीर मारत निहारि।
या हँसी कहा मन मैं बिचारि॥७०॥

बेगमोवाच—

(दोहा)

लै हरमैं सब संग मे, सजि सिकार को साज।
जिहि दिन जंगल मैं गए, आप गरीबनेवाज॥ ७१॥

मीर पर्‍यो मेरी नजर, खेलत तहाँ सिकार।
मेरे लागे मदन-सर, मोहिं न रही सँभार ॥ ७२ ॥
मैं तुरंग तातो कियो, तुरत गई तेहि पास।
सुख-समूह अतिसय लह्यो, आनँद सहित-हुलास॥७३॥

(सोरठा)

आवत सेर निहारि, गहि कमान् इक तीर लै।
मीर सु डार्‍यो मारि, भयो सिथिल नहिं संक तें ॥७४॥
मार्‍यो चूहो आप, दई बधाई सबन ही।
या सूरता अमाप, दृगनि देखि बाढ़ी हँसी ॥ ७५ ॥

(पद्धरी)

यह सुनत चढ़ी भौंहैं कमान।
दृग विषम बान-से लिए तान ॥
उठि आमखास बैठो सु आय।
हाजिर हजूर सब भए धाय ॥ ७६ ॥
यह आप हुकुम दीनो सुनाइ।
महिमा मँगोल की खबर ल्याइ।
है कहाँ खोजि करि लेहु अंत।
लीजै मँगाइ ताको तुरंत ॥ ७७ ॥
जानत सु एक तहँ रह्यो कोय।
कर जोरि अरज करि उठ्यो सोय ॥
साहानसाह आलम-निवाज।
रनथंभ-कोट चहुँआन राज ॥ ७८ ॥

* ७३ वें अङ्क की दूसरी तुक और ७४ वें अङ्क की दूसरी तुक भी कुछ-कुछ बदल दी गयी है।

हम्मीरदेव हिम्मत-उदार।
        संग्राम सिंह थाहत अपार॥
महिमा मँगोल ताकी पनाह।
        बैठो अडोल तिन गही बाँह॥ ७६॥
बरु उलटि गंग पच्छिम बहाय।
        चूकै न बोल चौहानराय॥
सुनि कियो कोप आलाउद्दीन।
        मोल्हन* बुलाय यह हुकुम कीन॥८०॥

पादशाहोवाच—

(पद्धरी)

चढ़ि तू तुरंत रनथंभ जाय।
        हम्मीरदेव चौहानराय॥
कहियो बुझाय गढ़वी गँवार।
        मत हो पतंग पावक मँझार॥ ८१॥
महिमा मँगोल दीजै निकारि।
        पुनि सहित-दंड देवलकुमारि॥
दीजै तुरंत दिल्ली पठाय।
        मत बैर आप हाथनि बढ़ाय॥ ८२॥
मोल्हन सलाम कीन्ही बहोरि।
        उठि चल्यो सामुहँ हाथ जोरि॥

* यह नाम कवि का कल्पित है, क्योंकि यह शब्द फारसी अरबी का नहीं है, लिये मुसलमानों का नाम नहीं हो सकता। पादशाह के वजीर का नाम नुसरत खाँ था।

घोड़े हजार इक साथ आन।
रनथंभ ओर कीन्हों पयान ॥ ८३ ॥
हिंदू अनेक बहु मुसलमान।
गहि अस्त्र-सस्त्र सज्जित जवान ॥
मोल्हन उजीर पहुँच्यो तुरंत।
रनथंभ-कोट देख्यो अगंत ॥ ८४ ॥
पुनि गयो कोट-भीतर उजीर।
ठहराय पौरि पर और भीर ॥
साईस एक वाजी-सवार।
चलि गयो आप ड्योढ़ी-अगार ॥ ८५ ॥

(दोहा)

आवत देखि उजीर कौं, अरज करी दरबान।
ल्याइ वेगि हाजिर करो, हरष कही चहुँआन ॥ ८६ ॥
तब उजीर हाजिर भयो, मोल्हन माथ नवाय।
हाथ जोरि सनमुख तहाँ, बैठ्यो आयसु पाय ॥ ८७ ॥

(सोरठा)

लखि गढ़ रनथभोर, मोल्हन करत विचार मन।
यह हमीर बरजोर, कैसेहुँ कह्यो न मानिहै ॥ ८८ ॥

(दोहा)

मोल्हन-बदन मलीन लखि, साहसीक रनधीर।
महाराज राजन-सिरे, बोले बचन गँभीर ॥ ८९ ॥

राजोवाच—

(चौपाई)

कहु मोल्हन आयो केहि कामा । है तो परम कुसल आरामा ॥
पुनि है कुसल गेह मैं तेरे । जो अयान अरु बृद्ध घनेरे ॥ ६० ॥
जो है दिल्ली-तखत-नसीन । पातसाह आलाउद्दीन ॥
सो तौ है अनंद-सुख-सानौ । यह मोल्हन तुम मोहि बखानौ ॥६१॥
सहित-गुमान गरब आतंक । सुनि राजा के वचन निसंक ॥
तब उजीर दोऊ कर जोरि । मोल्हन बोल्यो वचन बहोरि ॥६२॥

वजीरोवाच—

(दोहा)

महाराज सोई कुसल, सदा सहित-परिवार ।
पातसाह जा पर करै, कृपा एकहू बार ॥ ६३ ॥
मोहि पठायो आप पै, साह अलाउद्दीन ।
चहत अरज कीन्ही सु मैं, जो कछु आयसु दीन ॥६४ ॥

(झूलना)

कही साह सल्लाह की बात मोसों,
सुन्यो भाजि आयो इहाँ मीर खूनी ।
इसी वासते आपने मोहि भेजा,
उसे दीजिए वेग मंगाय हूनी ॥
करौ साथ कुंवारि देवल्लताई,
भरो दंड बैठे करो राज दूनी ।
यहै बात मेरी कही मानि लीजै,
नही नेक मैं होयगी राज सूनी ॥६५॥

राजोवाच—

(झूलना)

कहै वीर चोहान हम्मीर हठी,
सुनौ साँच उज्जीर मोल्हन्न ये रे।
गडा-मंडला आदि उज्जैन सारे,
जिते कोट बंके तिते जानि मेरे॥
रहै साह राजी चहै बंब बाजी,
कहौ एक ना एक-सौ-आठ फेरे।
परयो मीर पाछैं धरयो दंड डोला,
दियो जात नाही कहौं पास तेरे॥६६॥

मोल्हनोवाच—

(झूलना)

सुनो वीर चौहान गुम्मान छोड़ो,
अहंकार मैं जात संसार मारो।
असी लच्छ सावंत औ सूर प्यादे,
जही साह गाजी चढ़ै सज्जि सारो।
डिगै मेरु डोलै मही भानु झंपै,
परै देखि आकास मैं चंद तारो।
डरै काल कुब्बेर सुरेंस कंपै,
किती वात तेरी, कह्यो कान डारो॥६७॥

राजोवाच—

(झूलना)

चलै सेस डोलै मही मेरु हल्लै,
महारुद्र सो तीसरो नैन खोलै।

चहूँ ओर तोपैं चलै बान छूटैं,
झकाझोर संसेर की मार बोलै॥
उठैं रुंड भू मैं परे मुंड लोटैं,
भरे कुंड लोहू बहे बीर डोलै।
चले प्रान जावैं कटैं गात सारे,
टरै बात ना जौन हम्मीर बोलै॥९८॥
दुवौ जोरिकै हाथ मोल्हन्न बोल्यौ,
सुनो राय चौहान या बात मेरी।
कही साह सो बेग मंगाय दीजै,
यहै मंत्र नीकौ गुनौ लाख बेरी॥
करै सामनो कौन सुल्तान आगे,
किसे काल कोप्यो महामीच घेरी।
परै बाज-सो टूटिकै साह गाजी,
उड़ै रंक पंखी जिती ताब तेरी॥९९॥

राजोवाच—

(सवैया)

मोल्हन बात न सो बदलैं अब जो प्रथमैं मुख सों हम काढ़ी।
मैं अपने बल बैर कियो किन मीच रहै सिर-ऊपर ठाढ़ी॥
दीन मुहम्मद कों करि खीन मलीन करौ मुख की छवि बाढ़ी।
कै सुलतान की सान रहै कै हमीर हठी की रहै हठ गाढ़ी॥१००॥

मोल्हनोवाच—

(कवित्त)

डोला भेजि दीजै जौन माँगत दिली को पति,
मोल्हन कहत सीख मेरी सीस धरु रे।

माँगत मतग सत सहस तुरंग मानु,
महिमा मँगोल कों बुलाय संग करु रे॥
जीवन जगत नर-देही दुरलभ जानु,
जासों बचै जीव सो जतन अनुसरु रे।
दीपक के संग जैसे जरत पतंग तैसे,
जंग कै हमीर हठधारी तू न मरु रे॥ १०१॥

राजोवाच—

(सवैया)

मोल्हन बोल सँभारि न बोलत बारहि बार बिवाद बढ़ावै।
जो गहि मारहुँ तोहि इहाँ सुलतानहिं कौन जवाब सुनावै॥
लोक करै अपलोक सबै जुग चारिहूँ दूत बध्यो नहिं जावै।
मैं अपनी अपकीरति के डर बात सहौं सब दैव सहावै॥१०२॥

(कवित्त)

सकल अमीरन के आगे या सँदेसो मेरो,
मोल्हन सुनाइयो अलाउदीन गाजी कों।
माँगत प्रथम गढ़ गजनी हमीर फेरि,
दीजै अलीखान* सो सहीस निजु बाजी कों॥
दीजै भेजि हरम हजूर मरहट्ठी बेगि,
चाहिए जो कुसल तखत सिर-ताजी कों।
तुमसे मिलैं जो पातसाह पाँच और तौ,
हमीर गढ़-चक्कवै चहत रन-साजी कों॥१०३॥

* कवि ने पादशाह के बेटे का नाम अली खाँ कल्पित किया है, यह नाम पादशाह के किसी बेटे का नहीं था। अलाउद्दीन के भाई का नाम अलग खाँ तो अवलत्त था, शायद उस नाम को भ्रम में कवि ने अली खाँ कर लिया हो तो आश्चर्य नहीं।

(दोहा)

सुनि मोल्हन चहुँआन के, अचल बचन डर-हीन।
सिर नवाइ माँगी बिदा, तब नृप आयसु दीन ॥ १०४ ॥
बिदा भयो आयो तुरत, दिल्लीपति के धाम।
हुकुम पाय भीतर गयो, सब मिलि कियो सलाम ॥ १०५ ॥
पातसाह पूछन लगे, कहु कैसो बिरतंत।
हाथ जोरि सिर नायकै, मोल्हन अरज करंत ॥ १०६ ॥

मोल्हनोवाच—

(कवित्त)

आलम-निवाज सिरताज पातसाहन के,
गाज तें दराज कोप नजर तिहारी है।
जाके डर डिगत अडोल गढ़धारी,
डगमेगत पहार औ डुलत महि सारी है॥
रंक जैसो रहत ससंकित सुरेस भयो,
देस-देसपति में अतंक अति भारी है।
भारी गढ़ जारी सदा जंग की तयारी धाक,
मानै ना तिहारी या हमीर हठधारी है॥ १०७॥

(छप्पय)

हुकुम न मानै एक, मीर मंगोल न देवै।
डोला दंड न देय, कहै नहि आवन सेवै॥
माँगे उठत रिसाय, नैन राते करि हेरै।
धरै मुच्छ पर हाथ, बहुरि निरखै समसेरै।
मार्‍यो न मोहिं अपजस-डरनि, अति गढ़पत्ति गाढ़ो अहै।
चहुँआन धनी रनथंभ को, खंभ रोपि जूझन कहै॥ १०८॥

माँगै बैठो आप, बहुरि तुमसों सुनि लीजै।
अलीखान कों भेजि, नारि मरहट्टी दीजै॥
गढ़ गजनी दै देहु, खैर तब दिल्ली जानौ।
यह सँदेस मुख आप, राय चौहान बखानौ॥
सुनु पातसाह मोल्हन कहै, जुद्ध हेत सनमुख खरौ।
निरसंक संक मानै न कछु, आप कोटि उद्यम करौ॥ १०६॥
यह जवाब साहानसाह, आलम-निवाज सुनि।
कियो कोप मुख चढ़ी ओप औरै अनूप पुनि॥
दियो हुकुम सावंत सूर सेना सँवारि सब।
अस्त्र-सस्त्र सबकों बुलाय वकसौ तुरंत अब॥
हयवर मतंग तोपन सहित, करिय कूच आरंभ को।
मारौ हमीर डारौ उलटि, कोट कठिन रनथंभ को॥ ११०॥

(दोहा)

कोपि साह सेना सजी, प्यादे हय-गय मत्त।
सजे सूर-सावंत सब, सुमुख समर-अनुरत्त। १११॥

(कवित्त)

चंचल चलाँके वेगवंत वर बाँके,
बंकता के आसमान जे कसत करि तंग के।
सोहत असीले हेम-हीरन सजीले,
गरवीले गुन-आगर सजीले अंग-अंग के॥
माखैं मन समर-सपूती अभिलाखैं लाल
आँखैं करि लखत उमंग अंग जंग के।
ताजी तेजलच्छी पौन-पच्छी से उड़ात सजे
कच्छी पातसाह के सुलच्छी रंग-रंग के॥११२॥

कारे कद भारे भीम दीरघ दँतारे जौन,
जलधर-धारैं ज्यो फूहारै फुफुकारे ते।
चूमै चंद-मंडल उदंड सुंडादंडनि सों,
कुंडन ज्यों सोखैं सिंधु सलिल अपारे ते॥
पगन धरत मग धरनि धुजावैं,
धूरि लावैं निज ऊपर अतोल बलधारे ते।
प्यारे श्रीअलाउदीन पातसाहवारे,
पीलवानन सँवारे जे मतंग मतवारे ते॥ ११३॥

(भुजगप्रयात)

जरीदार बन्नात की झूल झंपै।
सिरीचंद सों सुंड औ मुंड ढंपै॥
अँबारी कसी हेम की लाल ऐसी।
मनो मेरु पै मंडपी भानु कैसी॥ ११४॥
सजे सूर सावंत जे सस्त्रधारी।
लसे अंग संग्राम की साज सारी॥
धरे टोप कुंडी कसे कौच अंगं।
झिलिम्मैं घटाटोप पेटी अभंगं॥ ११५॥
लिए खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे।
तमंचे छुरी सेल नेजा सँभारे॥
लिए चाप तूनीर मैं तीर पूरे।
चले साह के संग मैं जंग-सूरे॥ ११६॥
मतंगं मँगायो चढ्यो साह गाजी।
चढे सूर-सावंत औ वंच वाजी॥
जुझाऊ बजै राग मारू अलापै।
चढै रंग वीरं सुनै क्रूर काँपै॥ ११७॥

(दोहा)

दस सहस्र सावंत अरु, धवल सूर बहु लीन।
असी लक्ख पायक-सहित, चढ्यो अलाउद्दीन ॥ ११८ ॥

(कवित्त)

साजि चतुरंग बीर रंग ह्वै मतंग चढ़ि,
चलत अलाउद्दीन दीन अरजत है।
धाई धाम-धाम धूम धौंसा की धुकार,
धूरि धाराधर धावत धरा पै गरजत है॥
ऐल परी गैल मैं मतंग मतवारन की,
अड़त अडैलन तुरंग तरजत है।
धावत प्रबल दल धूजत धरनि फन,
फुंकरत फ्ररत फनीस लरजत है॥ ११९ ॥
नहाँ तज्जत तुरंग गलगज्जत गयंद-गान,
बज्जत निसान धुनि धावत दराज।
सुनि धुक्कत धरनि मद मुक्कत महीप,
सब सुक्कत सुरेस सुर सहित समाज॥
पुनि कंपति पुहुमि रवि झंपत गरद्द चलि,
चंपत प्रबल दल दीरघ दराज।
मुख राजय सुरंग चढ़ी अंगन उमंग,
जब साजि चतुरंग चढ्यो साह सितराज ॥१२०॥
चली छार से करत खुर-धारनि पहार,
अति तायल तुरंगम उड़त जनु बाज।
गिरि विंध्य तें बिलंद मद झरत-मदंध,
दूर ही तें दिगदंतिन दलत गजराज॥

जोर ठौर-ठौर होत गज-घंटन के सोर,
घोर धौंसा की धुकारनि परत जनु गाज।
छबि-छैल सूर-बीर गन दीरघ दराज,
दल साजि चतुरंग चढ़्यो साहि-सिरताज॥१२१॥

(चौपाई)

कियो कूच साहन सिरताज। साह अलाउदीन सजि साज॥
चला प्रबल दल दारुन ऐसे। उमड़त सिंधु प्रलै मैं जैसे॥१२२॥
बाजे बहुत जुझाऊ बाजे। सुनत बिरद्द वीर गल-गाजे॥
जात नचावत चपल तुरंगा। कसे सस्त्र सोहत सब अंगा॥१२३॥
मग डोलत मतंग मतवारे। गरबवंत गिरि-ढाहनहारे॥
चला कटक केहि भाँति बखानौं। पावस-घन घुमंडि नभ मानौं॥१२४॥
अस्त्र-सस्त्र चमकत बहु भांती। बिज्जु-छटा छूटत जनु जाती॥
धमक धूम धौंसन की ऐसे। गरजत गगन घोर घन जैसे॥१२५॥

(दोहा)

पातसाह-रुख पौन-रुख, दल-बद्दल-समुदाय।
घेरेउ गढ़ रनथंभ-गिरि, इमि चाऱ्यो दिसि जाय॥१२६॥
ज्यों सकोप सुरपति-पुरी, बलि घेरी करि जोर।
पातसाह त्यों कोप करि, घेऱ्यो रनथंभोर॥१२७॥
चहूँ ओर डेरा परे, खाईं-ओट प्रहार।
भटभेरा नेरा रहा, भरि गोली की मार॥१२८॥

(चौपाई)

ठाढ़ो सुरुख मखमली डेरा। लसत कनात सुरुख चहुँ फेरा॥
तनी चाँदनी राजति भारी। झुकति झालरैं मोतिनवारी॥१२९॥
बैठ्यो तहाँ साह-सिरमौर। सनमुख खरे दूरि सब ओर॥

बैठे सस्त्र-अस्त्र कर-धारी। प्रथम पौरि पर रक्षक भारी ॥१३०॥
गहगह नौबत बाजति आगे। निज-निज काज करन सब लागे ॥
सूर-बीर उतरे सब ठोर। करत बिचार देखि गढ़ ओर ॥१३१॥
सावधान डेरा करि लीन्हें। बहुरि जंग-हित उद्दम कीन्हें ॥
दल मैं दीन्ह्यो हुकुम पुकारी। अस्त्र-सस्त्र सब धरौ सँभारी ॥१३२॥

(दोहा)

बढ़ि-बढ़ि बाँधे मोरचे, लोग देखि नियराय।
तीर-तुपक की मार मैं, तोपैं दईं लगाय ॥१३३॥
देखि कटक चहुँआन को, तुरत खबर करि दीन।
गढ़ घेर्‌यो सुनि हिंदपति, साह अलाउद्दीन ॥१३४॥
तब हमीर देख्यो कटक, कोट-निकट चहुँ ओर।
जैसें सावन मैं घुमड़ि, नभ घेरत घन-घोर ॥१३५॥

(सोरठा)

बैठो बिहँसत बीर, मीर राखि निज सरन मैं
पातसाह की भीर, मैं हमीर मारौं सकल ॥१३६॥
जहाँ नृपति-सिरमोर, तहँ आयो मंत्री चतुर।
माथ नाइ कर जोर, करत अरज भूपति सुनौ ॥१३७॥

(चौपाई)

पातसाह करि कोप कराल। साजि कटक आयो ततकाल ॥
घेरेउ कोट हुकुम परचंड। मीर-सरन अरु माँगत दंड ॥१३८॥
जौ न देहिं तौ होत विनास। दीन्हें बड़ो जगत मैं हास ॥
दोऊ भाँति बात यह ऐसी। साँप-छछूँदर की गति जैसी ॥१३९॥
विग्रह मैं कछु भलो न लेखैं। खाली सुलह होत नहिं देखैं ॥
महाराज दीजै फरमाय। ताको तुरतै करै उपाय ॥१४०॥

(दोहा)

भुज फरकत हरखत हिये, बिहँसत बदन हमीर।
फेरि हेरि समसेर-दिसि, बोले बचन गँभीर ॥१४१॥

राजोवाच—

(दोहा)

गौरि संभु-तन परिहरै, अचल मेरु चल होय।
बोल्यो बचन हमीर को, चलनहार नहि कोय ॥१४२॥
सिंधु चलै मरजाद तजि, उलटै अवनि अनंत।
बोल्यो बोल हमीर को, सो नहिं बहुरि चलंत ॥१४३॥
सरनागत पालन करै, अरु बरतै सुचि नीति।
समर सस्त्र सनमुख सहै, यह छत्रिन की रीति ॥१४४॥
लखि दीनन को दुख हरै, करै प्रजा पर प्रीति।
प्रान तजै पर-काज कौं, छत्री समर-अजीत ॥१४५॥

(कवित्त)

संकट सुरेस को जथारथ निरखि देह,
दीन्ही है दधीचि पर-स्वारथ प्रमान कै।
करुना कपोत की कहत सिविराज दए,
काटि-काटि अंगन तुला मैं तौलि दान कै॥
दीन्हो सीस जगत-जसीले जगदेव आज,
छत्री मैं हमीर कलि कीरति अमान कै।
प्रगट अकारथ मरन सब ही को हमैं,
राखिबे सरन पर-स्वारथ प्रधान कै ॥१४६॥

(सवैया)

जात मरे मरिहैं जग-जीव जिते धरि देह धरा पर आवैं।
अमृत पान कियो न कोऊ यह जानि लई निहचै सब भावैं॥
है रन तीरथ छत्रिन को पर-स्वारथ की पदवी कहँ पावैं।
मानि जथारथ बात लरौ कलि मैं कबि-कोबिद कीरति गावैं॥१४७॥
कोटिन काटि कटारिन सों तरवारिन मारि करौं घमसानैं।
सुंड-बिहीन बितुंड परैं रन रुंड फिरैं रज-श्रोनित-सानैं॥
साह को देउँ पठै जम-लोक हमीर हठी तब मोहिं बखानैं।
कै अब सूरज-मंडल बेधि बसौं हरि के पुर बैठि बिमानैं॥१४८॥

(दोहा)

करौ तयारी कोट मैं, सजौ जुद्ध को साज।
मार देखि सीधी करौ, तोपैं प्रथम दराज॥१४९॥
सावधान सब मिलि रहौ, सत्रु न आवै पैठि।
करौ जुद्ध मन सुद्ध ह्वै, निज गढ़ ऊपर बैठि॥१५०॥
तब दिवान सिर नायकै, आयो बहुरि तुरंत।
बैठि बुलाए भूप के, सूर-बीर सामंत॥१५१॥
आइ जुहारे सुनत ही, गहि सब सस्त्र-उदार।
सावधान सागर अचल, धरे सपूती-भार॥१५२॥
जो जेहि लायक ताहि तसे, करि आदर-सनमान।
बहुरि सुनायो भूप को, आयसु आप दिवान॥१५३॥

दीवानोवाच—

(चौपाई)

भूप हुकुम दीन्हो यह आज। साजो सकल जुद्ध को साज॥
साह सत्रु सिर पर चढ़ि आयो। करिए कछुक तासु मन भायो।१५४

सुनि हरखे सब सूर घनेरे। उमगे अंग-अंग सब केरे॥
भए अरुनमुख अति मन-माखे। बलगत बचन बीर मुख भाखे।१५५।
कहौ कौन बिधि करहिं लराई। मारैं सत्रु समर बरियाई॥
कटि-कटि अंग धरनि गिरि जावै। पै रिपु जीवत जान न पावै।१५६।
तब प्रधान सिगरे सँग लीन्हें। गाढ़े सकल मोरचे कीन्हें॥
लगे बीर सब निज-निज थानैं। चहूँ ओर तें चढ़ीं कमानैं॥१५७॥
गुरदा चद्दर गंज गुबारे। लिए लगाय तीरकस भारे॥
तौपै दईं फेरि अति भारी। मंदर मेरु ढहावनहारी॥१५८॥
लिए तुपक जरजाल जमूरे। लै भरि भार बान बल-पूरे॥
गढ़ पर जुद्ध साज सब साजे। बलगत बचन बीरवर गाजे॥१५९॥
सुनत सोर धुनि घोर कठोरा। खरभर परी साह-दल-ओरा॥
उठि-उठि सस्त्र सँभारन लागे। जहँ-तहँ सकल सूर भय-पागे॥१६०
तुपक तोप जरजाल करारे। भरि-भरि मारु गंज गुब्बारे॥
चलीं तोप कछु जात न बरनी। कंपत आसमान अरु धरनी।१६१।

(छप्पय)

धूम-धाम-धुंधरित, भूमि असमान न सुज्झै।
मनु घमंडि घन-घोर, दौरि दुहुँ ओर अरुज्झै॥
तहँ तोड़े चमकंत, घोर घहरत घमंकैं।
चउ सोर चहुँ ओर, सुनत धुव-धाम धमंकैं॥
गरजंत मेघ तड़पै तड़ित, बज्र-सरिस गाला परैं।
अालाउद्दीन हम्मीर की, मार परी तोपनि लरैं॥१६२॥

(कवित्त)

मार परी दुहूँ ओर बिषम बिहद्द घोर,
ठौर-ठौर गोली बान-गोला बरसत हैं।

जैसे प्रलै-काल मैं फनी के फना-मंडल तैं,
फैलैं फूतकारनि फुलिगैं सरसत हैं ॥
बरसैं अँगारे कैधौं टूटैं आसमान-तारे,
कोटिन कतारे केतुवारे दरसत हैं ।
तोपैं औनि अंबर कों कठिन कराल मानौं,
रुद्र-नैन-ज्वालन के ज़ाल भरसत हैं ॥१६३॥
कछू सूझत न पार परी मार बेसुमार,
मढ़्यो भूमि आसमान धूम-धाम घन-घोर ।
मनों घुमड़ि-घुमड़ि नभ घेरत उमड़ि,
घन गाजत दराज तोप बाजत बजोर ॥
महताब चमकंत रुचि रंजक उड़ंत,
चपला-सी तड़पंत घहरंत करि तोर ।
बरषंत तीर-गोली-दल बुंद-नीर-धार,
परैं गाज तें दराज गुरु गोला ठोर-ठोर॥१६४॥

(भुजंगप्रयात)

दुहूँ ओर सों घोर यों तोप बाजैं ।
प्रलै-काल के-से मनों मेघ गाजैं ॥
हलै मेरु डोलै मही सेस कंपै ।
उठी धूम-धारा धुजै भानु झंपै ॥१६५॥
भई बान-बंदूक की मार भारी ।
मनों बारि-धारा महामेघवारी ॥
उड़े सोर प्याले निराले चमंकैं ।
घटा-जोट मैं दामिनी-सी दमंकैं ॥१६६॥
लगै कोट मैं आनिकै जोर गोला ।
न पाखान टूटै कहूँ एक तोला ॥

जहीं साह की फौज मैं आनि लागैं।
उड़ैं केतिकौ केतिकौ दूर भागैं ॥१६७॥
लगैं बान-गोली गिरैं सूर ऐसे।
गिरा खात पंछी गिराबाज जैसे ॥
परी मार ऐसी दुहूँ ओर भारी।
परे साह की फौज मैं खग्गधारी ॥१६८
फटे टोप कुंडी तनंत्रान फूटैं।
कटे अंग-अंगं नरं-प्रान छूटैं ॥
उठावंत एकै करैं एक जंगं।
लुरैं एक लोटैं परे अंग-भंगं ॥१६९॥

(दोहा)

होत जुद्ध अति क्रुद्ध ह्वै, लरत सुभट रन धीर।
तहँ निसंक चहुँआन-पति, देखत नाच हमीर ॥१॥
बाजत ताल-मृदंग-धुनि, नाचत नटी-नवीन।
लसत वीर हम्मीर तहँ, राग-रंग-रस-लीन ॥१॥

(कवित्त)

रचित रुचिर मनि-मंदिर मैं राच्यो रंग,
नाचति सुगंध वार-अंगना निहारी है
मंजु मैनका-सी मंजुघोषा-सी सरस भरी,
रंभा-सी अनूप रूप भूषन सँवारी है
ताल-गति-तानैं लेति सात सुर तीनि ग्राम,
भाव भरी करति अलाप सुकुमारी।
पूरै सम पायल करत भनकारी नाच,
देखत निसंक या हमीर हठधारी है ॥१॥

(सवैया)

होति दुहूँ दिसि मार भयंकर तोपन लोप चहैं करि दीनो।
नाचति वार-वधू गढ़ पै दल-बीच कुलाहल भूतन कीनो।
तालमृदंगन की धुनि होति सुनै उत साह करै मन हीनो।
वीरहमीर हिये हरषै लखि मार भयौ सुलतान मलीनो॥१७३॥

(छप्पय)

नि ग्राम सुर सात, होत आलाप राग पट।
ग-डाँट सम विसम, तान उनचास कोटि बट॥
यत वार-अंगना बजत मिरदंग ताल तहँ।
यो कोट-ऊपर निहार चहुँआन राज तहँ॥
बैठहमीर रन-धीर अति, निडर संक मानै न हिय।
आ॰दीन अंतक-सरिस, पातसाह मन कोप किय॥१७४॥
नैन भृकुटी कराल, मुख लाल रंग करि।
दंत, फरकंत अधर बलगंत क्रोध भरि॥
छार छन मैं पहार, धरि कोट उलट्टौं।
-देस दलमलौं, दलन देसन दहपट्टौं॥
मारहमीर पल मै पकरि, संक न यह मेरी करै
आलदीन जानै न मोहिं, गढ़ गँवार गाढ़ो धरै॥१७५॥

(दोहा)

तसाह अति क्रोधि करि, दीन्हो हुकुम जरूर।
लबेग उड्डान कों, हाजिर करौ हजूर॥१७६॥
म पाय उड्डान कों, हाजिर कियो तुरंत।
सलाम ठाढ़ो भयो, सूर निकट सावंत॥१७७॥
कह्यो उड्डान तें, नाचत नटी निहारि।
न एकौ देखिए, चोट तीर की मारि॥१७८॥

(छप्पय)

करि सलाम उड्डान, लई कर मैं कमान गहि।
प्रथम करी टंकार, फेरि गोसा सँवार तहिं॥
लियो तीर तूनीर माँहि तीछन अति जोई।
रोदे फोंक जमाय, चाप संजित करि सोई॥
तान्यो कसीस भरि कान लगि, बान बीच छाती हनो।
नाचति सो नारि भू मैं परी, चौंकि चमकि चपला मनो॥१७६॥

(कवित्त)

गुननि गहीली गति लेति गरबीली,
अंग-अंग दरसावत उलटि पट-ओट तें।
काम-अबला-सी कला कोटिन करति,
चंचला-सी चित्त चोरति चलत लचि लोट तें॥
लाग्यो वान छाती मैं अचानक विषम,
दृग कौंधा-सो चमकि चकचौधा लग्यो चोट तें।
हेम की छरी-सी मंजु मोतिन जरी-सी,
किन्नरी-सी टूटि भूमि मैं परी सी परी कोट तें।१८०।

(दोहा)

तरफराति तरुनी गिरी, सर मान्यो उड्डान।
हरषि साह साबस कही, चकित भयो चहुँआन॥१८१॥

(चौपाई)

हरषे पातसाह मन माँही। कियो हमीर सोच लखि ताही॥
प्रथम मंत्र मान्यो कछु नाहीं। हठ करि मंड्यो जंग वृथाहीं॥१८२॥
भयो उदास संक कछु आनी। ऐसी बात मीर जब जानी॥
आयो तहाँ तुरत मंगोल। बोल्यो हाथ जोरि मृदु बोल॥१८३॥

मीरोवाच—

(चौपाई)

महाराज राजन-सिरताज। भए उदास आप केहि काज ॥
तुरत लेत बदलो मैं देखौ। मरो अलाउद्दीनहिं लेखौ ॥१८४॥
कह्यो मीर को सुनि मन भायो। धीरज बहुरि भूप-मन आयो ॥
दिवस दूसरे सोई रंग। लाग्यो होन दुहुन दिसि जंग ॥१८५॥
पुनि हमीर गढ़-ऊपर आयो। सुरपति-कैसो साज सजायो ॥
अंग-अंग-प्रति भूषन साजै। निरखत कोटि काम छबि लाजै ॥१८६॥
उड़त चमर चारो दिसि ऐसे। सरद-घटा रबि-ऊपर जैसे ॥
भूप-भवन बैठ्यो दरबार। दियो नाच को हुकुम उदार ॥१८७॥
बहुरि नटी जब निरतन लागी। देखन लग्यो भूप अनुरागी ॥
देखत साह कोप मन कीन्ह्यो। कोट कटा करिबे मन दीन्ह्यो ॥१८८॥
ताही समय तुरत उठि धायो। लिए कमान-तीर चलि आयो ॥
हाजिर भयो तहाँ पुनि मीर। कहे बचन मंगोल गँभीर ॥१८९॥

मीरोवाच—

(चौपाई)

कहौ आप उड्डान सँघारौं। जासों जाय सोच मिटि सारो ॥
हुकुम होय साहैं गहि मारौं। छन मैं छत्र-भंग करि डारौं ॥१९०॥

हम्मीरोवाच—

(दोहा)

साह न मारत काठ को, जो खेलत सतरंज।
उचित न यह जो डारिए, पातसाह प्रभु भंज ॥१९१॥

(सोरठा)

छोड़ि साह के प्रान, मारि और मेरो हुकुम।
महिमाँ गही कमान, सुनि आयसु चहुँआन को ॥१६२॥

(दोहा)

हाथ जोरि हम्मीर कहँ, महिमाँ गही कमान।
अरध-चंद-सर साधिकै, तानी कान-प्रमान ॥१६३॥
वज्र-सरिस छाड़्यो विषम, मीर तीर परचंड।
पातसाह-सिर-छत्र को, दंड कियो द्वै खंड ॥१६४॥
एक तीर सों काटिकै, छत्र दियो महि डारि।
तब हमीर हर-हर हँसे, सनमुख मीर निहारि ॥१६५॥

(कवित्त)

खंड ह्वै टुट्टक पर्‌यो लूक सो लपकि छत्र,
हूक-सी समानी हिये साह सोक सों भरे।
जोहत जके-से चौंकि चलत थके-से सबै,
सुकुर मनावत अमीर अति ही डरे॥
आनि धर्‌यो आगे बान-सहित उठाय,
हेम-हीरन-रचित गजमुकुता लसैं जरे।
मानौं आसमान तें नछत्रन-समेत पर्‌यो,
भूमि मैं कलाधर सँपूरन कला धरे ॥१६६॥
छत्र के परत सब ही की छवि छीन भई,
दीन भयो वदन अलाउदीन साह को।
पीर उठी उर मैं अचानक अमीरन के,
धीरज धरै को धार धूजत सिपाह को॥

सहमि गए-से सबै सोचत ससंक कहैं,
खैर करी खालिक खुदाय सदराह को।
भयो थो दिली को पति देखत फनाह आज,
दाह मिटि गयो था हमीर नरनाह को ॥१९७॥

(दोहा)

पीर अमीरन के उठी, धीर तज्यो सुलतान।
तुरत मँगायो आप-ढिग, छत्र-सहित रिपु-बान ॥१९८॥
सर मैं बाँच्यो साह तब, 'गहो बली कर अत्र।
तिय बदले तेरो कियो, मीर भंग सिर-छत्र ॥१९९॥
महिमाँ मीर मँगोल मैं, कर-बर गही कमान।
है दुरलभ अब आपको, जियत राखिवो प्रान' ॥२००॥

(चौपाई)

सर मैं लिख्यो मीर को जौन। बाँच्यो पातसाह तब तौन॥
भयो सपेद बदन द्रुग झंपै। डोलत दंत गात सब कंपै ॥२०१॥
करत बिचार और सब ठाढ़े। खरभर परी सोच मन गाढ़े॥
पीर मनाय कहत कर जोरी। बच्यो साह साहब गति तोरी ॥२०२॥
साह अलाउद्दीन सुलतान। करत विचार छोड़ि अभिमान।
जुद्ध होत बीते दिन एते। कटे कटक कहि जात न जेते ॥२०३॥
अगनित सूर-वीर सावंत। गज तुरंग औ सुतुर अनंत॥
पैदल परे भूमि मैं लोटैं। लगीं बान गोली की चोटैं ॥२०४॥
तुपक तीर तोपनि की मार। बरषै मनों मेघ जल-धार॥
गढ़ गाढ़ो छूटब कठिनाई। नर पाथर की परी लराई ॥२०५॥

(दोहा)

कोट-ओट गढ़पति लरै, अंग न आवत घाव।
दहपट्टत दल दूरि तें, चढ़त चौगुनो चाव ॥२०६॥

कटा होत दीसत नहीं, मारे सकत न छूटि।
कोट कटक की मार मैं, गयो सकल दल खूटि ॥२०७॥
छत्र-भंग मेरो भयो, मरे सूर-सावंत।
प्रान बचत दीसत नहीं, जानि लियो विरतत ॥२०८॥

(सवैया)

वीर हमीर हिये हरषै सर-गोलिन की वरषा बरषावै।
जात मरे सिगरे रन-सूर इतै, उत एकौ मरो न लखावै॥
काटिकै छत्र दियो महि डारि लिख्यो फिर पत्र प्रचारि सुनावै॥
डारिहै मारि उबारिहै को मन सोच यहै सुलतान के आवै ॥२०९॥
मौन भए मन-ही-मन मैं सुलतान विचारत वात अनेकौ।
जो लरिए मरिए इत तौ गढ़ की चढि पैयत घात न एकौ॥
नाहक जात मरे सिगरे भट आवत हाथ लखात न एकौ।
लौटि चलौ अपने घर कों जो भई सो भई कहि जात न एकौ।२१०।*
दीरघ सोच दिलीपति के दल छीन भयो बलहीन मलीनो।
सान गई अपमान अँगै निज प्रान बचै सोइ उद्दम कीनो॥
हार लई अपने सिर मानि निदान यहै करि आयसु दीनो।
लै अपनो दल संग सबै उठि भाजि चलो सहसा भय-भीनो।२११।

(कवित्त)

मारे गढ़ चक्कवै हमीर चहुँआन,
चक्र डारे गोल गरद ,मिलाय मद मानी के।
लोटैं रेत-खेत एकै पोटैं लेत-देत एकै,
चोटन-समेत लड़े लाड़िले पठानी के॥

* यदि इसकी पहली तुक यों बदल दें तो तुकान्त शुद्ध हो जाय—'मौन भए मन-ही-मन साह विचारत पै बनै वात न एकौ।'

हारे डर-मारे राह बसन-हथ्यार डारे,
बाहन सँभारे कौन भरे परेसानी के।
भाजे जात दिल्ली के अलाउदीनवारे दल,
जैसे मीन जाल तें परत दिसि पानी के ॥२१२॥
भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
भागे खानजादे प्रान मरत बचाय कै।
भाजि गज-बाजि रथ पथ न सँभारैं,
पारैं गोलन-पै-गोले सूर सहमि सकाय कै॥
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि वेगि,
बलित बितुंड पै बिराजि बिलखाय कै।
जैसे लगै जंगल मैं ग्रीषम की आगि,
चलै भागि मृग महिष बराह बिललाइ कै ॥२१३॥
भाजे जात रंक-से ससंकित अमीर,
परैं भीरन पै भीर धरैं धीर न रहैं थिरे।
जंगल की जार मैं पहार मैं पराय परे,
एकै वारि-धार मैं उछार मारिकै पिरे॥
कंपित करी पै साह साहब अलाउदीन,
दीन-दिल बदन-मलीन मन मैं खिरे।
प्रबल प्रचंड पौन-पच्छिमी-हमीर मारे,
बद्दल-समान मुगलद्दल उड़े फिरे ॥२१४॥

(दोहा)

भग्यो-प्रबल दल संग लै, दिल्ली को सुलतान।
हरष्यो राय हमीर-उर, गढ़ पर बजे निसान ॥२१५॥
आइ अरज मंत्रिन करी, सुनिए राय हमीर।
हिंदु-धनी हद आपकी, पति राखी रघुबीर ॥२१६॥

गयो साह दिसि आपनी, रह्यो हमारो खेत।
ऐसैं सुजस सुपंथ मैं, ईस्वर सबकों देत ॥२१७॥

(चौपाई)

जंग जीति जब लयो हमीर। भागी पातसाह की भीर ॥
ऐसी बात सुनी जब कान। रनमल नृपति-बंधु चहुँआन ॥२१८॥
सुजस भूप को सुनि मन मार्‍यो। मन मैं क्रूर कपट अभिलाख्यो ॥
यह निहचय तब करो बनाय। पातसाह को मिलिए जाय ॥२१९॥
करी तयारी सुत लै संग। कछुक ब्याज करि चढ़्यो तुरंग ॥
भाज्यो जात जहाँ सुलतान। पहुँच्यो तहाँ तुरत चहुँआन ॥२२०॥
हय तैं उतरि पूत लै साथ। सनमुख चल्यो जोरि जुग हाथ ॥
गज-समीप चलि गयो बहोरि। करि सलाम बोल्यो कर जोरि॥२२१।

रनमल्लोवाच—

(दोहा)

सुनौ साहसाहन-सिरे, तव सत्रुन कों साल।
मैं हमीर के बंधु को पुत्र, नाम रनपाल ॥२२२॥
हाजिर भयो हजूर मैं, हार सुनी जब कान।
अरज मानि मेरी मुड़ैं, अब ये फेर निसान ॥२२३॥
चलौ आप दैहौं तुरत, तिल-तिल भेद बताय।
लाय सुरँग छिन एक मैं, दीजै गढ़ उलटाय ॥२२४॥
पातसाह सुनि अरज कों, गरज आपनी हेन।
सिरोपाव दै सँग लियो, रनमल पुत्र-समेत ॥२२५॥

(चौपाई)

रनमल-साथ मुड़े सुलतान। बहुरि कोट-दिसि गड़े निसान॥
बहुरि मोरचेबंदी भई। खबर हमीरदेव-ढिग गई॥२२६॥
सुनत उठ्यो जनु सोवत जागि। उमड़ी अंग क्रोध की आगि।
मारो यहै हुकुम करि दीन्ह्यो। सूरन अस्त्र-सस्त्र गहि लीन्ह्यो।२२७।
दुहूँ ओर तें दारुन जंग। लागेउ होन भूरि भट-भंग॥
रनमल उहाँ भेद जो दीन्ह्यो। पातसाह सो उद्दम कीन्ह्यो।२२८।
गढ़ मैं सोधि सुरंग लगाई। सत सहस्र मन दारू पाई॥
कियो बहुरि ताको बलिदान। महिष एक सत नर इक आन।२२६।
दियो आगि तब उड़ी सुरंग। सहित-कोट गिरि कीन्ह्यो भंग॥
उड्यो कोट दारू के जोर। भयो भयंकर दारुन सोर॥२३०॥

(छप्पय)

धूम-धार-धुंधरित, धूरि-धुंधरित धाम ध्रुव।
डिगत कोट डगमगत, कूट डोलंत भूरि भुव॥
भयो सोर परचंड, घोर चहुँ ओर दंड इक।
खंड-खंड गिरिवर विहंडि, डार्‍यो अखंड दिक॥
जिमि चंड-वात बद्दल विहद, उठै घमंड उमंडरे।
तिमि उड़त कोट पब्बै-सहित, दल दब्बै तल छिति परे॥२३१॥
पर्‍यो सोर चहुँ ओर, घोर सब विकल नारि-नर।
उठी धूरि-धारा अपार, नभ-भूमि छार-भर॥
मारतंड छपि अंधकार छायो दिसान दस।
सोर तोर तहँ ओर, जोर करि सकै कौन कस॥
फूट्यो पहार सतखंड ह्वै, अरधखंड गढ़ भरहर्‍यो।
जुग दंड भयो दारुन सबद, चंड वज्र मानहु पर्‍यो॥२३२॥

(चौपाई)

उडो सुरंग कोट महराग्यो। परगट पातसाह जब जान्यो ॥
लियो प्रधान बालि निज आगे। मुदित हाल सब पूछन लागे ।२३३।
उडा पहाड़ कोट गढ जैसे। कीन्ही अरज जोरि कर तैसे ॥
सुनि सुलतान हिये हरषान्यो। आई फते हाथ यह जान्यो ॥२३४॥
उडत कोट चहुँआन निहार्यो। कछुक सोच संका उर धार्यो ॥
सबहिन करी अरज धरि धीर। सुनु चहुँआन बीर हम्मीर ॥२३५॥
अब यह समय सोच को नाही। निहचय याको करौ सलाही ॥
जीते जंग फते तुम पाई। भाग्यो पातसाह बरियाई ॥२३६॥
पातसाह को भागत जानि। तेरो वैर आगिलो मानि ॥
रनमल मिल्यो सत्रु की ओर। दियो भेद सिगरो सब ठौर ॥२३७॥
सहसा तिन सुरंग लगवाई। दियो कोट अरु कटक उड़ाई ॥
टूट्यो कोट कटक बहु खोई। भयो हाल कहि जात न जोई ॥२३८॥
यहि विधि भूपहि अरज सुनाई। सब मिलि रहे आर सिर नाई ॥
सुनि सब बात आनि उर धीर। बोल्यो वचन राय हम्मीर ॥२३९॥

हम्मीरदेवोवाच—

(दोहा)

सुनौ सपूतौ साथिकौ, सब को परे न रोज ॥
लियो जात याही समय, हित-अनहित को खोज॥२४०॥
रनमल तो रिपु-सरन मैं, जाइ बचायो प्रान।
दियो भेद सब आपनो, जोर पर्यो सुलतान ॥ २४१ ॥
अब हमको या कोट मैं, लरिबो बैठि निसंक।
उचित नही एकौ घरी, को राजा को रंक ॥ २४२ ॥
घर-भेदी रिपु के निकट, बैठो करत उपाय।
अनजानत ऐसहिं कहूँ, फेर न देहि उड़ाय ॥ २४३ ॥

यातें अब कढ़ि कोट ते, बाहिर बंब बजाय।
देखौ दल सुलतान को, कह्यो भूप हरषाय ॥ २४४

(चौपाई)

सुनिकै बचन भूप-मुख-बर के। हरषे सूर-बीर भुज फरके॥
उठि निज-निज गृह गए तुरंत। लागे सजन सूर-सावत ॥२४५॥
आप राय चहुँआन हमीर। तुरत मँगाय गंग को नीर॥
करि असनान दान बहु दीन्हो। बहुरि विप्र-गुरु पूजन कीन्हो २४६
लै प्रसाद पुनि बाहर आए। भूषन वस्त्र सस्त्र मँगवाए॥
विविध वसन-भूषन तन साजे। माथे टोप मुकुट-सम राजे।२४७।
कसो कठिन पेटी तनत्रान। पहिरी झिलिम भूप चहुँआन॥
कटि कटारि छूरी तरवारि। कर कमान सर गहे सँभारि।२४८।
सज्यो सूर छाजत छवि ऐसे। चलत काम जीतन जग जैसें॥
ह्वै तयार नृप बाहन माँगे। सजि तुरंग तब ल्याए आगे ॥२४६॥
चढ़ि चहुँआन बीर हरषायो। तब देवलकुमारि-ढिग आयो॥
देख्यो कुँवरि तात घर आयो। सहसा उठी सकुचि सिर नायो २५०
करि पियार पुत्री समुझाई। पुनि हमीर सब बात सुनाई॥
सुनि पितु-वचन सोच मन आनि। बोली कुँवरि जोरि जुग पानि२५१

देवलकुमारी उवाच—

(दोहा)

सुनहु तात मेरी अरज, सुत-वित वारहिं वार।
होत जात लहि नर-जनम, पुनि दुरलभ संसार ॥२५२॥
जीव रहै तौ जग रहै, जीव गए जग जाय।
को सुत को वित कौन के, आवत काम लखाय ॥२५३॥
जीवत ही के काम के, सुत-वित सब परिवार।
मरें न काहू को कहूँ, काहू कियो उबार ॥२५४॥

(छप्पय)

सुनहु तात मन गुनहु, एक उपजी कंकालिनि।
कुल-कलंक लखि कियो, दूर घर ते घरघालिनि॥
कै जानहु इक भई, बाल पुनि नाहर मारी।
कै जनमत मरि गई, एक दासी घरवारी॥
कर जोरि कहै देवलकुँवरि, मो बिनती चित मैं धरौ॥
दै देहु मोहि सुलतान कों, अचल राज गढ पर करौ॥२५५॥

(सोरठा)

सुनत सुता के बैन, नैन चढ़े फरकी भुजा।
बिहँसत मुख छवि-ऐन, तब हमीर बोले बहुरि॥ २५६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

करौं घोर घमसान, घेरि दल-बल दहपट्टौं।
सुडनि-रहित बितुड, मुंड समसेरनि कट्टौं॥
उठै रुंड रन रुधिर कुंड भरि भूत उमत्थै।
बधौं जुत्थ निज हत्थ, लुत्थ पर लुत्थ उलत्थै॥
आलाउदीन मारौं पकरि, देउँ पठै जमलोक को।
बेटी न बोलि काँचो बचन, यह समयो नहि सोक को॥२५७॥

(दोहा)

ठाढ़े कहि गाढ़े बचन, भूप सुतैं समुझाय।
मिल्यो बहुरि चहुँआन-पति, बड़गूजर सो जाय॥२५८॥

(चौपाई)

जाजा बड़गूजर पै जाई। कह्यो हमीरदेव समुझाई।
जाजा तुम परदेसी लोग। तुम को रहिवो इहाँ न जोग॥२५९॥

तुम अब जाहु आपने धाम। हम सो पर्यो सत्रु सों काम।
सूरज अगिनि रुद्र अहि काल। जदपि कोप ये करैं कराल ॥२६०॥
बरषै इंद्र घेरि घन घोर। गढ़ पर सजै प्रलय को तौर॥
तदपि सरन तें देउँ न मीर। केती पातसाह की भीर ॥२६१॥
जाजा जगत जियत जो रैहैं। बहुरि बुलाय गेह सों लैहैं॥
अब तुम जाहु कह्यो करि मेरो। मरिबो इहाँ उचित नहिं तेरो ॥२६२
सुनि हमीर के बचन सुहाए। बड़गूजर मन एक न आए॥
भूप-चरन मैं नायो माथ। बोल्यो बहुरि जोरि जुग हाथ ॥२६३॥

बड़गूजरोवाच—

(पद्धरी)

सुनु महाराज हम्मीरदेव। भर-जनम आपकी करी सेव॥
जिमि रहे बंधु-गृह जन हजूर। तिमि रह्यो मान मेरो जरूर॥२६४॥
दुरलभ जहान मैं भोग जौन। तेरे प्रताप हम करे तौन॥
वाहन अनेक गज रथ तुरंग। धौंसा नकीब सब चले संग॥२६५॥
मनिजटित हेम-भूषन अनूप। हम सजे अंग तव संग भूप॥
दुरलभ जहान मैं बसत जौन। हम किया रोज बकसीस तौन॥२६६
षटरस मँगाय भोजन अनूप। तुम करे मोंहि लै संग भूप॥
तन रोम-रोम मैं पग्यो लौन। करि सकत अंग एको न गौन॥२६७॥

(दोहा)

जे जन जाए जार के, ते निज-निज घर जाय।
स्वामी संकट मैं तजै, को एतो सुख पाय॥ २६८॥
स्वामी को संकट परे, जो तजि भाजै कूर।
लोक अजस परलोक मैं, जमपुर जात जरूर॥ २६९॥

(सोरठा)

जे भाजत करि भोग, स्वामी को संकट परें।
बसत नरक मैं लोग, जौ लौं ससि-सूरज रहैं ॥ २७० ॥
सुनु हमीर नरनाथ, मैं बड़गूजर जात को।
अब ह्वैहौ दै माथ, उरिन तिहारे लोन सो ॥ २७१ ॥
बोल्यो बहुरि हमीर, साबस जग तेरो जनम।
करौ तयारी वीर, मैं मिलि आऊँ जननि को ॥ २७२ ॥

(दोहा)

आगो माता के निकट, तब हमीर नर-भूप।
लखी सतोगुन-सकति-सी, बैठी सती-सरूप ॥ २७३ ॥

(चौपाई)

आवत देखि पूत को आगे। सहसा उठी मात सुख-पागे ॥
समर-साज लखि साजे गात। जियौ सपूत कह्यो अस मात॥२७४॥
तब हमीर दोऊ कर जोरि। बोलेउ बचन विनय-रस बोरि ॥
जीवन-आस मोहि कछु नाही। यह असीस तुम दीन्ह वृथा ही॥२७५
छत्री बरस बीस तें आगे। जियै तीस लौं जे बड़भागे ॥
सुनौ मात मैं तेरो पूत। मेरो धरम रहै मजबूत ॥ २७६ ॥
करि सुलतान-संग संग्राम। हरिपुर करौं बास अभिराम ॥
यह असीस दीजै परकास। जीवन की कछु मोहि न आस ॥२७७॥
यह कहि पर्‌यो चरन सिर नाइ। बीर हमीरदेव हरषाइ ॥
सिर धरि हाथ बीर की माता। दई असीस उमँग भरि गाता ।२७८।

मातोवाच—

(दोहा)

तीरों ऊपर तीर सहि, सेलों ऊपर सेल।
खग्गों ऊपर खग्ग सहि, रन-सनमुख सुत खेल ॥ २७९ ॥

भुज मुख छाती सामुहे, घावाँ ऊपर घाव।
पलक न झंपै पूत की, चढ़ै चौगुनौ चाव॥ २८०॥
तिल-तिल तन कटि-कटि परै, तेगाँ मुक्ख मुवन्न।
दीधी तोहि असीस मैं नारी गीत गुवन्न॥ २८१॥
जो जूझै तौ अति भलो, जो जीतै तौ राज।
देति पुकारें मैं सबैं, मंगल गावो आज॥ २८२॥

(तोटक)

जब लौं जननी-ढिग भूप गए। तब लौं सब सूर तयार भए॥
सजिकै घर तें मन मोद-मढे। बढ़ि रँग तुरंग नि माँझ चढे॥२८३॥
सब अंगन सार-सने सरसैं। रिपु को सुनि बाघ मनौं दरसैं* ॥
बरछी सर चाप कमान गहे। कटि तें सिर लौं ढकि ढाल रहे॥२८४
मिलि जुत्थनि जुत्थ वरुत्थ बने। बलगै मिलि एकन एक घने॥
मुख-जोस सँभार न रोस-भरे। अति भीम भयंकर सस्त्र धरे॥२८५॥
बनि वीर सबै नरधीर महा। मग जोवत वीर हमीर कहाँ॥
तेहि औसर भूप विनै करिकै। पुनि बैन कहे पग मैं परिकै॥२८६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(छप्पय)

करौं जुद्ध करि क्रुद्ध, आज अवरुद्ध सुद्ध मन।
अरि विहंडि करि खंड-खंड डारौं गनीम-गन॥
परै सोर चहुँ ओर घोर, दिन राति न सुज्झै।
गज तुरंग चतुरंग, अंग भटि भूत अरुज्झै॥

---

* यह तुक लेखक की भूल से कुछ अशुद्ध लिख गई थी, उसको इस प्रकार से सँवार दिया।

बिन मुड रुंड धावै धरनि, बचन बोलि चूकौं नही ।
मोरौं न बाग रन-भूमि तें, मानु मातु मेरी कही ॥ २८७ ॥

(दोहा)

जो ईस्वर कारन कहूँ, उलटे मुरैं निसान ।
तब तुम जौहर देखियो, मेरो बचन प्रमान ॥ २८८ ॥
पुनि माता के पग परसि, प्रमुदित राय हमीर ।
हरषि तुरंग मँगाय कै, चढ्यो वीर रनधीर ॥ २८९ ॥
चढत राय हम्मीर के, गहगह बजे निसान ।
चढे सूरे सा'वंत सब, रूपवान जसवान ॥ २९० ॥

(मोतीदाम)

चढे चहुँआन-धनी महराज । चल्यो दल दाबि दिगंत दराज ॥
बजै बहु बंब निसान अवाज । उठै घनघोर घटा जनु गाजु ॥२९१॥
सजोम जकद्दत जात तुरंग । चढ़े रन सूरन रंग उमंग ॥
लसैं सब अंग कसे तन-त्रान । गहे बरछी करवाल कमान ॥२९२॥
झुकी कलँगी सिर सोहत टोप । रही चढि आनन औरइ ओप ॥
चढी भृकुटी दरसै दृग लाल । भरे रन-रोस मनो रिपु-काल ॥२९३॥
चले जुरि जुत्थ बरुत्थ अनेक । लगे बगलै मिलि एकनि एक ॥
सज्यो मदमत्त मतंग अनूप । हमीर बिराजत तापर भूप ॥२९४॥
मनो गिरि कज्जल का मग जात । मढे मनि-कंचन सों सब गात
मनो मनि-मंदिर तापर मंड । उदै रवि आप भयो कर-चंड ॥२९५॥

(दोहा)

चल्यो कटक को कहि सकै, ताको बिहद बिवाद ।
चल्यो मनो परलय करन, सागर तजि मरजाद ॥ २९६ ॥
ग्रीषम गहर गनीम को, गारब गरब झुरारि ।
चढ़्यो प्रबल पावस-नृपति, दलबद्दल-बल धारि ॥ २९७

(छप्पय)

उठी धूरि घुरवान धरनि जलधर-दल जुट्टै।
धवल धजा बक-पाँति, छत्र छनदा छवि छुट्टै॥
घुरै बब घनघोर, बिरद बंदी पिक बोलै।
गज तुरंग रथ बेग, बिहद हद मारुत डोलै॥
छिति अंधकार छायो सघन दृग पसारि लूकै न कर।
दीसै न पंथ पावस नृपति, चढ्यो साजि दल जलद-वर॥२९८॥

(चौपाई)

बाजे बिहद जुझाऊ बाजैं। निरतैं मग तुरग गज गाजैं॥
पढ़ैं बिरद बंदी बरजोर। मढ्यो राग मारू सब ठौर।२९९॥
धौंसनि धमक धूम छिति छाई। सुनै कौन निज बात पराई॥
चलत कटक डोलत इमि धरनी। प्रबल पवन हत जिमि लघु तरनी
सहमि सुरेस संक मन माने। धनाधीस तजि धीर पराने ३००
मंदर मेरु कदलि-सम कंपै। फाटत फन फनीस फन झंपै *३०१
करत छार खुर-धार पहारनि। धोवत महि मतग मद-धारनि॥
महाराज चहुँआन हमीर। राजत मनु सुरेस रनधीर।।३०२॥

(दोहा)

महि कंपै चंपै चरन, रवि-रथ झंपै धूरि।
चढ्यो राय हम्मीर इमि, जुद्ध हरष अरि पूरि॥ ३०३॥

(छप्पय)

उतै साह आलाउद्दीन, हम्मीरदेव इत।
सजे जुद्ध-हित क्रुद्ध, परनि को सकै सोम तित॥

* इसकी चौथी तुक का पाठ ऐसा ही मिलता है।

दुहुँ दिसि खुले निसान, बंब मारू बहु बज्जै।
पढ़ैं बिरद बंदी बिलोकि सुर-नायक लज्जैं॥
गज-रथ-तुरंग पायक प्रबल, दल बिलोकि दुहुँ दिसि घने।
कुरुखेत करन अरजुन मनो, जुद्ध-हेत बहु बिधि बने॥३०४॥

(भुजगप्रयात)

दुहूँ ओर तें सूर-सेना सिधाई। महा मेघ कैसी घटा घेरि आई॥
महा अस्त्र औ सस्त्र सारे चमकैं। प्रलैकाल की दामिनी-सी दमंकैं॥
गहे खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे। छुरा सक्ति सूल सरं चाप धारे॥
लसैं बीर बंके निसंके जुझारे।महा मोद बाढे दुहूँ ओर सारे ३०६
सुनैं बीर बाजे बली बीर बाजे। करैं सिंहनाद मनो मेघ गाजे॥
उमंगं भरे रंग जंगै उमाहैं। दुहूँ ओर सो आपनी जीत चाहैं॥३०७॥
उतै साह आलाउदीनै गँभीर। इतै राय चौहान हम्मीर धीरं॥
लसैं मत्तमातंग पै दोउ ऐसे। लसैं स्वर्ग मैं सभु औ सक्र जैसे ३०८

(सोरठा)

आनन औरै ओप, भुज फरकन हरसत हियो।
देखीदेखा दुहुँन सों॥ ३०९॥
भए अरुन दृग कोप, अंग-अंग उमगे सुभट।
ताते करे तुरंग, तन बदन में॥ ३१०॥
चढ्यो चौगुनो रंग, सूरन के

(कवित्त)

आनि जुरे कटक दुहूँ दिसि ते कोपि मुख,
ओप रन सूरन के सखी बरसत हैं।
छाई छवि छूटै छटा निनद निसानन की,
बाजे बीर बंब राग मारू सरसत हैं॥
आगे चढि सुभट सुनावैं सिंहनाद,
एक-एक हाँकि हरपि कृपान करसत हैं।

भारथ के पारथ औ भीषम समान ये,
हमीर औ अलाउद्दीन दोऊ दरसत हैं ॥३११॥

(दोहा)

दल दीरघ दोऊ सजे, आए निकट निदान।
दुहूँ ओर सूरन हरषि, गहे सरासन बान ॥ ३१२ ॥
बंदूखैं बीरन सजी, द्वै-द्वै गोली डारि।
रंजक दै छाती धरी, जलद जामिकी वारि* ॥ ३१३ ॥
हाँकि-हाँकि मारन लगे, डाँटि-डाँटि रन सूर।
मारु मारु दल दुहुनि मैं, सबद रह्यो भरि पूरि ॥ ३१४ ॥

(कवित्त)

गहर गराब-नक्र थहरत भूमि मढी,
गगन गरद्द मैं न भानु सरकत है।
वरषत गोली वरषा मैं ज्यों जलद,
ज्वान मारैं वान तानत कमान मरकत हैं॥
केते लोट-पोट भए समर सचोट केते,
वाहन पै बिकल बिहाल लरकत हैं॥
फाटे परे रेजा लौं करेजा टूक-टूक कढ़े,
छाती छेद्र बिसिप बिसारे करकत हैं ॥ ३१५ ॥
उतै साह-आलम अलाउद्दीन गाजी इतै,
महावीर नृपति हमीर रन रंग मैं।
दुहूँ देत दलनि दिलासा दुहूँ ओर देखि,
चढ़ै चाँप चौगुनी उमंग अंग-अंग मैं॥

* इसके दूसरे दल का पाठ गड़बड़ है।

† इस कवित्त की प्रथम तुक का पूर्वार्ध स्पष्ट नहीं है।

मारे तीर-गोलिन के धीर न धरति छिति,
गगन समीर न सकत चलि संग मैं।
दारु बिन सिंग, वान-रहित निखंग भयो,
जंग भयो दारुन दुहूँ के परसग मैं ॥ ३१६ ॥

(चौपाई)

बढ़ि-बढ़ि करैं सूर सब वार। परी वान-गोलिन की मार ॥
लगी दुहूँ दिसि दारुन चोटैं। घायल परे भूमि मैं लोटैं ॥३१७॥
अंग-भंग रन फिरैं तुरंग। लगे दाव जिमि बिपिन-विहंग।
जर-जर गात जात मग भागे। बिकल वितुड वान वहु लागे ३१८॥
ढीले धनुष भए जिह-टूटे। भे खाली निखँग सर-खूँटे।
दुहूँ ओर पिलि चले तुरंग। पोरी मार नेजन के संग ॥ ३१९ ॥
हाँकि-हाँकि रिपु हनैं सजोर। वरषैं अस्त्र-सस्त्र अति घोर।
खुली खग्ग को करै सुमार। रन मै परी भयंकर मार ॥ ३२० ॥

(कवित्त)

चले सूल सर सेल दल पेल वगमेल,
परे गोलन पै गोल वोल वचन प्रमान।
भयो घोर घमसान धूरि धाई असमान,
तहाँ आपनो परायो न परत पहिचान ॥
मारु–मारु धरु तोरु सिर फोरु मुख मोरु,
मढ़्यो सोर ठौर-ठौर सुनि परत न आन।
जहाँ पारथ-समान रच्यो भारथ हमीर,
करै वीर रनधीर पुरुषारथ अमान ॥ ३२१ ॥
खुले काल तें कराल करवालन के जाल,
लाल-लाल मुख सुभट उमंग सरसाइ।

परी मार तरवारिन की करत सुमार,
कटे टोप तनत्रान परे भूमि भहराइ॥
परे बाजि बिन कंठ, बिन सुंडन बितुंड,
उठे मुंडन बिहीन रन रुंड रहे धाइ।
तहाँ पारथ समान पुरुषारथ-निधान,
चहुँआन-सिर-मुकुट हमीर दरसाइ ॥३२२॥
जुरे बाजिन सों बाजि अरु गज गजराजि,
पिले पायक प्रबल रन रोस सरसाइ।
उठी ढालन सों ढाल करवाल करवाल,
बीर खंजर-कटारिन हनत हरषाइ ॥
परे लुत्थन पै लुत्थ कटे बिहद बरुत्थ,
करकत सर सूल भभकत भरि घाइ।
तहाँ पारथ समान पुरुषारथ करत,
चहुँआन-सिर-मुकुट हमीर दरसाइ ॥ ३२३॥
कटी कूँडी टोप कवच सनाह टूक-टूक परी,
झूमि-झूमि भूमि मैं झिलिम झहराइ।
परे झुंडन के झुंड कटे बीर बरिवंड,
कहूँ रुंड कहूँ मुंड कहूँ तुंड तलफाइ॥
फिरैं भूत भीम भैरव भ्रमत रन रुद्र,
जुरि जोगिनी जगावत मसान जस गाइ।
होत जंग मन मुदित उमंग सरसाइ,
हेरि हनत बिपच्छिन हमीर हरषाइ ॥३२४॥
चली खेत रनथंभ के बिषम तरवार,
मार-मार मुख कढत मढत तन घाइ।
परे अंग कटि सुभट तुरंग न चलत,
चरबी के चहले मैं चलि सकत न पाइ॥

भरें कुंडन रुधिर रन रुंडन की रासि,
भर्षें माँस खग जंबुक पिसाच समुदाइ।
तहाँ बीर बलवान चहुँआन रन-धीर,
खग्ग बाहन हमीर हठधारी हरषाइ॥ ३२५॥

खेत रनथंभ के हमीर रन-धीर बली,
सेना पातसाह की कृपान मुख मारी है।
लुत्थन पै लुत्थ परे घायल बरुत्थ परे,
हत्थ कहूँ मत्थ खात आमिष अहारी है॥
लोहू के अलेल मैं गलेल देत भूत भिरैं,
रुंडन को प्रेत औ पिसाच सहचारी है।
तारी देत कालिका किलकि किलकारी दैकै,
भारी मुंडमालिका महेस उर डारी है॥३२६॥

लरे पातसाह औ हमीर रनथंभ-खेत,
बीरता बखानै कौन सुभट अरे जे हैं।
हाँकि-हाँकि दलनि दबाइ दहपट्टि हते,
बाजी औ बितुंड-झुंड झूमत खरे जे हैं॥
मारे रन मुगल पछारे पीरजादे,
अधफारे फरे लोटत पठान वे लरे जे हैं।
पार भए नेजे घूमि भूमि मैं परे जे,
करे टूक-टूक रेजे सरे रेजे से करेजे हैं॥३२७॥

(सवैया)

बीर हमीर इतै रनधीर लरै उत सा सुलतान सु हेलैं।
मार परी तरवारनि की बरसैं सर सूल भयंकर सेलैं॥
लोह कटे कुलही तनत्रान मची घमसान भए दल मेलैं।
लोह अघायल ह्वै रहे हायल घूमत घायल फाग-सी खेलैं॥३२८॥

(छप्पय)

विषम चली तरवारि, मार धुनि मारु-मारु धुनि।
मढ़्यो सोर यह घोर, परत नहिं और बात सुनि॥
जुत्थ-जुत्थ कटि परें, लुत्थ पर लुत्थ उलत्थिय।
कुंडनि श्रोनित भरे, सुंड बिन डोलत हत्थिय॥
असवार बिगत बाहन फिरैं, भिरैं भूत भैरव बिकट।
नोचैं गिरीस गिरिजा-सहित, रणभूमि रुडनि निकट॥३२९॥
भयो घोर घमसान, रोर दसहूँ दिसि माची।
डहडह बज्जै डमरु, जूह जुग्गिनि जुरि नाची॥
भ्रमत भूत जमदूत, बीर वैताल बहक्कैं।
ताल देत भैरव पिसाच, मिलि प्रेत डहक्कैं॥
कर गहि कपाल पीवै रुधिर, कंकाली कौतुक करै।
गन सहित रुद्र जाग्यो समर, लाग्यो घर मुंडन भरै॥३३०।
चुंचन चुत्थैं गिद्ध, माँस जंबुक मिलि भच्छैं।
चाटैं चरबि पिसाच, प्रेत गहि हाड़ प्रतच्छैं॥
भपैं मोद भरि भूत, रुंड भैरव लै भज्जैं।
गहि कपाल रन, पान करत चंडी गलगज्जैं॥
नाचैं निहारि जुरि जोगिनी, सुभट जच्छ-कन्या वरैं।
रनभुम्मि भए कायर विमुख, सूर समर साका करैं॥३३१॥

(दोहा)

भयो जुद्ध दिन सात लौं, रात-दिवस इक सार।
रुंड-मुंड परि खेत मैं, परगट भयो पहार॥३३२॥
कढ़ी कुटिल गति कोटि तें, श्रोनित-सरित अपार।
मज्जन करत पिशाच-गन, रुद्र सहित-परिवार॥३३३॥

(भुजगप्रयात)

परे मत्त दंती मरे सुंड-खंडे।
उभै ओर ते कूल राजैं प्रचंडे॥
बहै लाल लोहू लसै बारि-धारा।
मनो कौल फूले कलंगी अपारा॥३३४॥
परे अंग-भंगं तुरंगं अनेकं।
तिरैं ग्राह मानो गहे एक-एकं॥
फटे रुंड मुंडं कटे केस छूटे।
मनो पाज को पाय सेवाल जूटे* ॥३३५॥
परे खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे।
फिरैं धार मै ज्यों महा ब्याल कारे॥
तनत्रान फूटे फटे टोप ढालं।
परे नीर में ज्यों महा जंत्र-जालं॥३३६॥
बहै बस्त्र फेन फँसे अत्र मीनं।
महा मक्र-से सूर-सावंत पीनं॥
चली जोर बेग महा घोर धारा।
गिरे गर्व बृच्छं प्रतच्छ अपारा॥३३७॥
लसैं भौर-से भीम हैं चक्र जा मैं।
कलथ्यंत सूर तरंग ललामें॥
करैं केलि काली कपाली समेतं।
करै पान केते तृषावंत प्रेतं॥३३८॥
भिरे भूत भैरौ भरे गात धोवै।
कलोलै तिरैं जोगिनी ताप खोवैं॥

* इसके चौथे चरण में 'पाज' के स्थान पर यदि 'पोक' पाठ कर दिया जाय तो
ष्ट हो जाय।

परैं गीध आकास ते आनि टूटे।
बिना सोक कोकावली हंस जूटे ॥३३९॥*
महा भीम भारी नदी यों गँभीरं।
करी जुद्ध मैं बीर हम्मीर धीरं॥
तहाँ कोप कै साह आलाउद्दीन।
गही हाथ कम्मान औ बान लीनं ॥३४०॥

(छप्पय)

गहि कमान सर तानि, साह आलाउद्दीन इमि।
करै बान-बरषा अपार, सर बारि-धार-जिमि ॥
गिरैं बीर रन-धीर, भिरैं सनमुख दल दोऊ।
पीछे देत न पाँव, फेरि फिरि सकत न काऊ॥
मोडैं न बाग छांडैं न छिति, अड़ि घाड़े जड़-गति रहे।
श्रोनित अन्हाय हायल सुभट, तन घायल जकि थकि रहे ॥३४१॥

(दोहा)

भूरि सूर करना करैं, टरैं न तजि रन खेत।
सात दिवस संगर भया, निस-दिन रहा न चेत ॥ ३४२ ॥

(सोरठा)

बरषत सर सुलतान, बिकल देखि दल आपनो।
गहि कृपान चहुँआन, पर्‌यो मृगन मैं सिंह ज्यों ॥३४३॥
नागन कों खगराज, बाज बटेरनि ज्यों हने।
त्यों हमीर गलगाज, हन्यों साह-दल आप ही ॥३४४॥

---

* इन चौपाई की दूसरी तुक लेखक ने छोड़ दी थी, सो पूरी कर दी गई है।

(मोतीदाम)

गही करवाल हमीर हँकारि।
दलं दहपट्टि दियो महि डारि ॥
करी जुग खंड विहंडि-विहडि।
दियो जमदूतन को जनु बडि ॥३४५॥
करैं रन रग तुरंगनि भग।
चरै मनु केहरि कोपि कुरंग ॥
परे रन सूर कलत्थ-कलत्थ।
कहूँ धड़ मत्थ कहूँ पग हत्थ ॥३४६॥
फिरैं रन घूमत घायल सूर।
अघायल स्रोनित चायल चूर ॥
कटे तनत्रान फटे सिर-टोप।
लटे रिपु-रग मिटी मुख-ओप ॥३४७॥
लगे रन धावन मुंड अपार।
वही पुनि दारुन स्रोनित-धार ॥
उठे अति कोप कवध्र उदार।
भई यह भूमि भयकर मार ॥३४८॥
जहाँ चहुँआन गही समसेर।
दिए सब सत्रुन के मुख फेर ॥
चढे गज भाजत फौज निहारि।
तही सुलतान गयो हिय हारि ॥३४९॥

(दोहा)

भाग्यो दल सुलतान को, जोर पर्‌यो चहुँआन।
हाँकि-हाँकि मारन लगे, धीर वीर बलवान ॥३५०॥

(छप्पय)

भयो जुद्ध अति घोर, राम-रावन रन जुज्झे।
पुनि पारथ अरु करन, कोपि कुरुखेत अरुज्झे॥
लर्‍यो भीम गहि गदा, गाजि दूरयोधन मार्‍यो।
पुहुमि राय सो जुद्ध, काल चहुँआन सँहार्‍यो॥
सुलतान गरब गंज्यो समर, तिमि हमीर सूरन सजे।
निरतत रुद्र नारद निरखि, डिमि-डिमि-डिमि डमरू बजे ३५१

(सोरठा)

भयो घोर घमसान, परे खेत सिगरे सुभट।
दल सब आयो काम, रहे नपत-ज्यों भोर के॥३५२॥
दल-बल सान गँवाइ, दै हमीर कों सुजस बर।
भग्यो साह सिर नाइ, पील-चढ्यो जित तित लखत।३५३

(चौपाई)

भागी सेन साह की ऐसें। बधिक-जाल तें पच्छी जैसें।
सूखे अधर बदन कुम्हिलाने। खोइ सान सकल सनमाने॥३५४
झुके सीस सब सस्तर डारे। परत न पग मग में मन मारे।
भयो साह तन-बदन मलीनो। ज्यों रबि उदै चंद द्युतिहीनो।
जब हमीर नृप जीत्यो जग। सूरनि चढ्यो चौगुनो रंग।
बढ़ि-बढ़ि बहकि बीर चहुँआन। छीन साह के लिए निसान।
जूझे सूर बीर रनधीर। पाई फते राय हरमीर।
राय खेत जब झारन लागे। झुके निसान गए बढ़ि आगे।
होनहार भावी बलवंत। बिधि केहू को न पायो अंत।
तुरतें आइ महल ने बूझी। दई सुनाय अनहि अनसूझी॥३५८
झुके निसान कोट-दिसि आवें। आर न काऊ संग लखावें।

सुनि सबहिन बिचार यह कीन्यौं। रन मै महाराज जस लीन्यौ ॥
रन तें मुड्यो न छत्री आन। गढ-दिसि आवत मुडे निसान ॥
अब रिपु फने खेत मैं पाई। लैहै लूटि काट बरिआई ॥ ३६० ॥
यातें हुकुम भूप कर जौन। आज उचित करिवा है तौन ॥
यह विचार सब रानिन कीन्ह। करि असनान दान बहु दीन्ह ॥

(दोहा)

ह्वै पवित्र नृप-वचन सुनि, सब रानिन रनिवास।
विन कारन जौहर भयो, विधि-अनरथ-परकास ॥३६२॥
होनहार सो ह्वै रह्यो, बिन कारन बिन जोग।
जैसे या रनथम को, जौहर का उपयोग ॥३६३॥
छुरी--खंड अरु खग लै, मरी कटारी खाय।
कतिक दारु मैं जरी, दारु जोर विछाय ॥३६४॥
एकै साहस मैं भरी, परी कूप मैं दौरि।
कोऊ गिरि गिरि गेह मैं, मरी आप सिर फोरि ॥३६५॥
दस हजार जौहर भयो, छिन मैं लगो न बेरि।
तब उलट्यो रनथंभगढ़, नृप हमीर दल फेरि ॥३६६॥
जीति जग सुलतान सों, चढ्यो रग चहुँआन।
भरि उमग आवत चल्यो, गहगह बजत निसान ॥३६७॥
आवत भूप उमग भरि, सुन्यो कुलाहल कान।
पूछ्यो तब काहू कह्यो, सब विरतत बखान ॥३६८॥
दस सहस्र जौहर भए, सुनि हमीर चहुँआन।
सुनि सँदेस—'आवत चले, गढ-दिसि झुके निसान ॥३६९

(चौपाई)

सुन्यो स्रवन मै जौहर होन। छन इक रह्यो भूप गहि मौन ॥
पुनि विचार मन मै ठहरायो। विधि-परपंच न परत लखायो

कीन्यो करन करैगो सोई। यह विधि-चरित न जानत कोई॥
विधि बलवान जगत सब मानौ। बिधि-बस सकल सुरासुर जानौ
जो विधि चहै करैहै सोई। मेटनहार और नहि कोई॥
जो चाही कीन्हीं विधि तौन। हरष सोक यामैं कहु कौन ३७२
होनहार सो टरै न टार। सिव श्रीपति विरंचि पचि हारे॥
कोटि उपाय करै किन कोई। परवस होनहार सो होई॥३७३॥

(कवित्त)

भावी बस भूमि जल पावक अकास पौन,
　　भावी हरतार करतार प्रभु लेषिए।
भावी-बस अंगिरा वसिष्ट मुनि नारद औ,
　　सनक सनंदन सनातन विसेषिए॥
भावी-बस सेस औ सुरेस औ वरुन जम,
　　काल ससि सूरज असुर अवरेषिए।
भावी चहै जोई सोई करै औ करावै जग,
　　भावी-बस ईस औ अनंत विधि देषिए॥ ३७४॥

(दोहा)

गावत गुन आगम निगम, निसि-दिन लहत न अंत।
तीन काल जुग चार मैं, है भावी बलवंत॥३७५॥
हानि लाभ जीवन-मरन, चर अरु अचर समान।
विधि-प्रपंच परगट जगत, भावी-बस सब जान॥३७६॥
है हरता करतार प्रभु, कारन-करन अखेद।
यह विचारि चहुँआन के, मन उपज्यौ निरवेद॥३७७॥
समर जीत जौहर सदन, सब ईस्वर परपंच।
कीन्हो यह निरधार मन, हरष सोक नहिं रंच॥३७८॥

झूठो जग बस और के, स्ववस बात नहिं एक।
निहचै करि हम्मीर नृप, बोले सहित-विवेक ॥३७६॥

हम्मीरदेवोवाच—

(चौपाई)

सब मिलि सुनौ बात दै कान। है मेरो यह वचन प्रमान ॥
मै रिपु-भंग जग मैं कीन्यो। सुजस राखि सरनागत लीन्यो
समर जीति सब सत्रु भगाए। सुजस समेत लौटि गढ आए।
इन सबहिन मिलि तजे परान। मेरो वचन न दीन्यो जान
समर जीति जौहर को होन। जो अहचरज भयो यह तौन ॥
अब विलोकि मेरे मन आई। है प्रधान ईस्वर सब ठाई ॥३८२॥
जग मैं लह्यो सुजस वहुतेरो। गयो गेह छिन मैं मिटि मेरो।
उभै तमासे नैननि जोहि। उपज्यो तत्व-ज्ञान अब मोहि ॥३८३
यह जग इंद्रजाल सम जानौ। करनहार नट-सरिस बखानौ ॥
छिन मैं करत और का और। देखि न परै रहै सब ठौर ॥३८४॥
कारन-करन आप सब जोई। सिरजनहार जगत को सोई ॥
ताकी सरन आज मैं जैहौं। राजभार सुत के सिर देहौं ॥३८५॥

(दोहा)

जाहि जानि रन मै मर्यो, जर्यो सकल परिवार।
छन भर उचित न जीवनो, ताको इहि संसार ॥३८६॥

(कवित्त)

दान दीने द्विजनि दरिद्र करि दूरि भूरि,
दंड दीने खलन प्रचडनि उताल मे।
हार दीनो अरिन विडारि तरवारि मुख,
न्याय दीने सकल निपटि चुनि हाल मे ॥

तात मात सुंदरि सकल परिवार सुख,
दीने मैं हमीर हठधारी सब काल मैं ॥
राज दैहौं सुत कों समाज सब साज आज,
सीस दैहौं अरपि गिरीसजू की माल मैं ॥३८७॥
राज सिर सुत के समाज सिर काज-भार,
देत मैं न अरत विषाद नेक मन मैं।
सोधि-साधि सबहि प्रबोधि कै प्रसंग कहे,
बाध देत घटत उछाह सब तन मैं ॥
चक्कवै हमीर धीर धरम-धुजा की धुजा,
सीस देत ईस कों छितीस एक छन मैं।
रौर परी दौर अकुलाने अलकेस,
लगी सोर करैं सुंदरी सुरेस के सदन मैं ॥३८८॥

(सवैया)

साजिकै राज को साज सबै सुत के सिर आप दियो करि टीको।
गंग के नीर कियो असनान दियो बहु दान दुजानिन ही को ॥
लै अपने कर मैं करवाल नरेस हमीर हठो अति नीको।
काटि दियो सिर ईस के हाथ भयो सुरलोक मै नाथ सची को ॥
सीस चढ़ाय दयौ नरनाथ हमीर हठी जग जानत सारे।
देववधू बरपैं बर फूल बजैं नभ नौबत ढोल नगारे ॥
जात विमान चढ्यो चहुँआन दुरैं सिर चौंर चहूँ दिसि भारे।
आनि गहो उठि श्रीपति बाँह भए हरि-सेवक सेवनहारे ॥३९०॥

(दोहा)

जीवत अरि-दल दलमल्यो, मरि लीन्यो हरिधाम।
धन हमीर छिनि छत्रपति, अमर तिहारो नाम ॥ ३९१ ॥

(कवित्त)

माने देव दुज मनमाने साधु सत हित–,
सहित पिछाने सुखसाने वाम धाम को।
लाले सुत-वाले प्रतिपाले या पुहुमि पर,
घाले मुख काले कै निकाले चोर चाम को॥
लीने जग सुजस हमीर करि साके वीर,
कीने लोक अमर जसीले निज नाम को।
मारे अरि समर सुरेस-दुख टारे आज,
फारि रविमंडल सिधारे सुर-धाम को॥३६२॥

(दोहा) *

को या धरती मैं भयो, तुव समान चहुँआन।
अरि मार्‍यो तन परिहर्‍यो, वचन न दीन्यो जान॥३६४॥
वलि-बावन कुंती-करन, ज्यौं नृप सिवी-कपात।
त्यौं हमीर औ मीर को, कलि मैं सुजस-उदात॥३६५॥
छत्रिन के कुल को भयो, छिति पर भानु हमीर।
कियो सुजस परताप सों जगत-उज्यारो वीर॥३६६॥
वहुरि गयो वैकुंठ को, नृप हमीर चहुँआन।
कियो राज ताको तनय, जानत सकल जहान॥३६७॥
यह हमीर को रायसो, चित्र लिख्यो लखि सार।
छंदवंद 'सेखर' कियो, निज मति के अनुसार॥३६८॥
महाराज के हुकुम तें, सिद्ध होत सब काज।
भयो ग्रंथ जिनकी कृपा, परिपूरन सुभ आज॥३६९॥

* यहाँ का एक दोहा छूट गया है।

२ ० ६ १
कर नभ रस अरु आतमा, संवत फागुन मास ।
कृस्नपच्छ तिथि चौथ रवि, जेहि दिन ग्रंथ-प्रकास ॥४००॥
राधावर, कै जगत मैं, श्रीनरेंद्र मृगराज ।
'सेखर' को प्रभु लोक मति, दूजो लखत न आज ॥४०१॥
मोहिं भरोसो रावरो, महाराज सिरमौर ।
करो कृपा द्विज दीन पै, निरखि आपनी ओर ॥४०२॥
जौ लौं ससि-सूरज रहैं, सुरपुर सक्र-समाज ।
चिरंजीव तब लौं रहौ, श्रीनरेंद्र मृगराज ॥४०३॥

॥ इति श्रीहम्मीरहठ चंद्रशेखर कवि कृत संपूर्णम् ॥

शुभंभूयात् ।

१६०२

टिप्पणियाँ

१—गिरिवरधर = श्रीकृष्ण। गगधर = महादेव।

सूचना—दोहा एक अर्धसम मात्रिक छंद है, इसके प्रथम एव तृतीय चरणों में १३-१३, दूसरे एव चौथे चरणो में ११-११ मात्राएँ होती हैं। अत मे 'गुरु-लघु' रखते है।

२—परसराम = परशुराम। अहि-फन = शेष के मस्तक पर। जिमि पत्र = पत्ते के समान, हलके रूप मे। मृगराज = सिंह। तव = तुम्हारा।

३—मृगपति = सिंह।

४—बोलि = बुलाकर। छंद-बंद = छंदोबद्ध। सोहावनि = अच्छी लगनेवाली।

५—जिहि·· चरित्र—चित्र में जैसे चरित्र लिखे थे। भाषा करी = भाषा में रचना की।

६—जहान = संसार।

७—रायसो = वृत्तांत, वर्णन (युद्ध)। विधि = प्रकार। निर-धारि = निश्चित कीजिए (समझिए)।

८—दीनपति = दीनों का पालक। तखत-नसीन = सिंहा-सनासीन। दूजो = दूसरे। तपै = तपता है, अपना प्रताप चारों ओर फैलाता है।

९—मेदिनी = पृथ्वी। झपै = ढक जाता है। सहज = स्वभावतः।

१०—दल बल = सेना। बंक = टेढ़ी दृष्टि से। राव = राजा। रंक = गरीब।

११—हजूर = सामने। हरमैं = बेगमें। खवास = दास दासियाँ।

१२—बैस = (वयस्) उम्र । मदन = कामदेव । तरकि = विचार करके । पातसाह = बादशाह । चाद = चाव । चायल = चाव से । कलाधर = चद्रमा ।

सूचना—मनहरण कवित्त वर्णिक दडक है । इसके प्रत्येक चरण में १६ और १५ अक्षरों के विराम से ३१ अक्षर होते हैं । अत में कम से कम एक गुरु वर्ण होता है ।

१३—आलिजाह = (अरबी) ऊँचे दर्जे का, हे शाहशाह । अरजैं = विनय ।

सूचना—सोरठा एक अर्धसम मात्रिक छद है । इसके विषम चरणों में ११-११ और सम चरणों मे १३-१३ मात्राएँ होती हैं । विषम चरणों मे तुकात मिलता है, जिसके अत मे गुरु-लघु होता है । दोहे का उल्टा सोरठा होता है ।

१४—वरु = श्रेष्ठ । भोर = प्रात काल, दूसरे दिन ।

१५—कानन = वन, जगल ।

१६—तुरंग = घोडा । कुल्लह — शिकारी घोडे । समुद = (समुद्रह) बढिया, सवारी करने योग्य घोडा । कुमैत = (तुर्की-कुमेत) स्याही लिए लाल रग का घोडा । सुरंगा = नारगी रग का घोडा ।

सूचना—चौपाई एक सम मात्रिक छद है । इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती है । अत मे प्राय दो गुरु वर्ण रखे जाते हैं । पहले-दूसरे एव तीसरे-चौथे चरणों मे तुकात मिलता है । कहीं-कहीं पद्रह मात्राएँ होती हैं । अत मे गुरु-लघु या लघु-गुरु होता है, तो उसे चौपई कहते हैं ।

१७—अमित = अगणित । रग = आनद । को = कौन । औरै = और प्रकार का, विचित्र । कुरग = मृग । ठौर = स्थान । जरदाजी = सुनहली । ओजी = ओज से भरी हुई ।

१८—साखत = समर्थन करते है, प्रमाणित करते हैं । पसवद =

(फा० पेशबंद) चारजामे में लगा हुआ दोहरा बंधन जो घोड़े की गर्दन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है, जिससे चारजामा घोड़े की दुम की ओर न खिसक सके। पूँजी = धन, मूल्य। हैकलैं = (हय + गल) घोड़े के गले का एक गहना। सडक = बागडोर, राम। सेत = उज्ज्वल। गजगाहैं = झूल। यालनि = (तु० याल) घोड़े की गर्दन पर के बाल, अयाल।

१९--बरजोर = बली। बखाने = प्रशंसित। ढिग आने = पास ले आए।

२०--खुले थान ते = अस्तबल से खुलने पर। जोम = उत्साह। जकदत = उछलते हुए। जमत = जमते हुए। तुरी = घोड़े। मतंग = हाथी। हुंकरत = हुंकार करते हैं। हींसत = हिनहिनाते है। फबत = शोभित होते हैं। फुंकरत = फुफकारते हैं। फर-मंडल = (रण-क्षेत्र। मँझार = मध्य। दीरघ = भारी। दलत हैं = नष्ट करते है।

२१--सूर = वीर। कमान = धनुष।

२२--सिगरी = सब। ते = वे। पट = वस्त्र। दामिनी = बिजली। जेब = (फारसी) शोभा। जड़ाव = रत्नजटित। उमंग = उत्साह। फोरि = चीरकर।

सूचना-मत्तगयंद सवैया के प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।) और दो गुरु होते हैं।

२३--बिमला = सरस्वती। बाजि = घोड़ा। वलित = युक्त। वैनी = चोटी। जरी = जटित। हेम = सोना। पैनी = तीखी। जौनी = जिस। वीथी = गली। तौनी = उस।

२४--आखेट = शिकार। अरण्य = वन। तुरंग = घोड़े। पौन = पवन, वायु। गौन = गमन। बाज = शिकारी पक्षी। पैम = अवस्था। पीखे = (सं० पीठ = स्थान) युक्त। समेर = तलवार। नेजे = भाले। कानै = कानों मे।

सूचना—झूलना के प्रत्येक चरण में चार-चार यगण के विश्राम से ८ यगण (ISS) होते हैं। कवि ने इसे 'झूलना' लिखा है, पर वस्तुत यह महाभुजगप्रयात कहलाता है।

२५—पूर = घाव । छोटैं = छोटा ही । ओटैं = आड में । जम्मराजा = यमराज । धूम = धुआँ । घोटैं = घूँटते हैं।

२६—झारखड = उडीसा । माहताब = चद्रमा । जुन्हाई = चाँदनी । जोबन तरग = यौवन का उल्लास । सरस = बढकर । अभिराम = सुदर । या कराह = यह आह । अमित = अत्यत । अनग = कामदेव ।

२७—गात = शरीर । चटपटी = आकुलता । अटपटी = अंडबड । लात = पैर । जात बनत न लात के = पैरों से जाते नही बनता । कुलंग = उछाल । साहसीक = (साहसिक) हिम्मतवर । मानके = पराजित करके । ताता करि = तीव्र करके । ताजन दै = बढ़ावा देकर । फफकि = फर्र से ।

२८—निदान = अत मे । तान = तानकर, खींचकर । मीत = मित्र । नेक = थोड़ी । सरसाय = बढाकर ।

२९—बावरी = (स० वातुल) पगली । पतसाह = (पादशाह) बादशाह । अनैसी = अनिष्टकारिणी ।

३०—अडोल = अटल, अकाट्य ।

३१—उदास = दुखी । जीवन-आस = जीने की आशा ।

३२—बाम = स्त्री । अक = गोद । मोट = गठरी । निधि = खजाना । रक = गरीब ।

३३—रस-विवस = आनद मे मग्न । थैर = स्थान ।

३४—पास = जाल । चीर = वस्त्र । सँघारयो = मार डाला ।

३५—मनमाने = मनमानी, मनचाही । जाम घरी = एक प्रहर ।

वसन = वस्त्र । रूपभरी = सुंदरी (बेगम)। रति-पति = कामदेव । सस्तर = शस्त्र । हय = घोड़ा । मीतै = मित्र, यार । भामिनि = स्त्री ।

सूचना—त्रिभंगी ३२ मात्राओं का मात्रिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में १०, ८, ८, ६ पर विश्राम होते हैं । अंत में दो गुरु वर्ण रहते हैं ।

३६—नट्टी = नारी । वाग = घोड़े की डोर । वाग पलट्टा = घोड़ा मोड़ा । कौतुकवारी = क्रीड़ा करनेवाली । मग डारे = रास्ते में ही छोड़ दिए । चाप = धनुष । धूम = धूमधाम । कलोलैं = खेल ।

३७—ललामैं = रमणीक । खुस्याल = प्रसन्न । करोरि = करोड़ों । कलामैं = बातें । गला मै = गले से लगाकर । ममारखी = बधाई । वारहि बार = बारबार ।

३८—सिगरी = सब । सब ओर = चारों तरफ । सेज = शय्या । बीन = वीणा । तास = ताश (खेलनेवाला)। कंत = स्वामी । दिमाग सवाई = बढ़े-चढ़े दिमागवाला ।

३६—सहित-अदाव = आदाब के साथ । ढिग = पास । एकै = कोई ।

४०—ऐसे = इस प्रकार । वामैं = स्त्रियाँ । अरामैं = आनंद, सुख ।

४१—सैन-सदन = शयन-गृह । परवीन = (प्रवीण) । रतिपति = कामदेव ।

४२—जावत = देखते हुए । रस-पागे = आनंद-मग्न । मूषक = चूहा ।

४४—खवास = दास । नाज़िर = सरदार । मुबारकी = बधाई ।

४५—सनमुख = सामने हो । मतिहीन = निर्बुद्धि ।

४६—बहुरि=फिर । हेत=कारण । परसत पगनि=पैर छूती है ।

४७—हट परयो=हठ किया। तरेरे=आँखें तीव्र कीं । करि=करो । विहान=कल ।

४८—खोजा=(फा० ख्वाजा) नौकर । भोर=प्रात काल । भजि जाय=भाग जाय ।

४६—नाजिर=देख-भाल करनेवाला, सरदार । भाजु=भागो । खलीता=खरीता, लिफाफा ।

५०—थार=आघात, चोट । जोर=प्रबल । जंग=युद्ध । जकत है=युद्ध में जोर से गरजता है । पा ावार=समुद्र । जंग. .छकत हैं-'उसकी सेना का युद्ध देखकर यमराज भी क्षुब्ध होकर छक जाता है । को=कौन ।

५१—सरने=शरण । अजौं=आज भी । अरने का=अडने को, मोर्चा लेने को । दड भरौ न=कर नही देता । हर वार=प्रत्येक वार ।

५२—कोट=चहारदीवारी, परकोटा । अडोल=निश्चल । अबोल=निस्तब्ध ।

५३—पग दियो=पैर रखा । दरवान=द्वारपाल । कित तें=कहाँ से । न पैहो जान=जाने न पाओगे ।

५४—भाषौ=कहलाता हूँ ।

सूचना—भुजंगप्रयात वर्णिक छद है । इसके प्रत्येक चरण में चार यगण (ISS) होते हैं ।

५५—बानी=बात । दुरे आनि पीछे=उसके पीछे हो लिए । जोहारे=सलाम की । पाहुन=अतिथि, मेहमान ।

५७—हिंद-धनी=भारत के स्वामी । हिम्मत-धनी=हिम्मत वर । समर=रणक्षेत्र ।

५८--आप-ढिग=अपने पास।

५९--रिसाने=क्रुद्ध हुए। पराने=भागे। थंभन=स्तभ, खंभा। सरने=शरण में। जाने=जानते हैं।

६०--उबारि लेहि=उद्धार करे। उभै=(उभय) दोनो। गैहैं=गावेंगे।

६१--उमग=उमग। गात=शरीर। समाना=अँटना।

६२--उवै=उदित हो। बरु=चाहे। गौरि=पार्वती। अरधंग=(अर्धाग) महादेव का वाम अग। सुरतरु=कल्पवृक्ष। लोमस=एक दीर्घजीवी मुनि। मीर=महिमा-मंगोल। बहुरो= फिर से।

सूचना—छप्पय हिंदी का विषम छद है जो रोला और उल्लाला के योग से बनता है। चार चरण रोला (प्रत्येक चरण मे ११ और १३ के विराम से २४ मात्राएँ और अत में चौकल SS, IIS, SII—गुरु लघु नहीं) और दो दल मे उल्लाला (पहिले-तीसरे चरणो मे ११ और दूसरे-चौथे चरणो मे १३ मात्राएँ, अत मे त्रिकल III, IS—गुरु-लघु नहीं)।

६३--खसै=गिर पडे। झपै=छिप जाय। अचल अवनि= स्थिर पृथ्वी। संकरपन=शेषनाग। उतलै=उतावले होकर। परलै= प्रलय।

६४--मुसाहिब=ओहदेदार सरदार।

६५--लाहू=खून। परि बोलै सिर बोल=रण-क्षेत्र मे सिर कटकर गिर पड़े और बोल बोले।

[सिंह-गमन=सिंह का सिंहनी के साथ केलि करना। कदलि=केला। तिरिया=स्त्री। तेल चढना=विवाह का पूर्वभूत एक कृत्य जिसमे दूर्वा से तेल चढाया जाता है।]

६६--अडोल=अटल। राज=दिन।

सूचना—पद्धरी सोलह मात्राओं का मात्रिक छंद है। इसके अंत में गुरु लघु होता है।

६७--तौन=वही। तरुनी=मरहठी बेगम। बाम=स्त्री।

६८—खवास=दासियाँ।

६९--बिसेषि=विशेपतया, जोर देकर। प्रवीन=कुशल, चालाक।

७१--हरमैं=बेगमें। गरीबनेवाज=दीनदयालु।

७२—मीर=महिमा मंगोल। मेरी नजर परयो=मुझे दिखाई पडा। मदन=कामदेव। सर=बाण। सँभार=होश-हवास।

७३—तुरंग=घोडा। तातो कियो=तेज किया। हुलास=(उल्लास) हर्ष।

७४—कमान=धनुप। संक=आशका, भय।

७५—या=यह। सूरता=वीरता। अमाप=अपार, अगणित।

७६—बिषम=टेढे। आमखास=वह स्थान जहाँ बादशाह गुप्त सलाह करते हैं। हजूर=सामने। धाय=दौडकर, शीघ्रता से।

७७—लेहु अत=आखिरी दर्जे तक।

७८—कोय=कोई। साहानसाह=शाहशाह। आलम-निवाज=संसार पर दया करनेवाले।

७९—हिम्मत उदार=बडी हिम्मतवाले, अत्यत साहसी। संग्राम-सिधु=रण समुद्र। पनाह=शरण।

८१—गढ़वी गँवार=गढ़ का रहनेवाला मूर्ख। पतंग=फतींगा। पावक=अग्नि। मँझार=मध्य।

८२—दड=कर। देवलकुमारी=हम्मीरदेव की कन्या।

८३—घाड़े=घुडसवार। आन=लेकर। पयान=प्रयाण, प्रस्थान।

८४—अस्त्र=फेंककर मारे जानेवाले हथियार, जैसे बाण।

सस्त्र =(शस्त्र) हाथ मे लिए-लिए चलाए जानेवाले हथियार, जैसे तलवार। अगत=आगे, सबसे पहले।

८५—पौरि=द्वार पर। बाजी=घोड़ा। अगार=घर। ड्योढ़ी-अगार=ड्योढी पर का स्थान, जहाँ पर सिपाही रहते है।

८६—दरबान=द्वारपाल। वेगि=शीघ्र।

८७—आयसु=आज्ञा।

८८—बरजार=प्रबल।

८९—बद्न=मुख। राजन सिरे=राजाओ मे शिरोमणि।

९०—गेह=घर। अयान=(अज्ञान) बाल-बच्चे। घनेर=घने, बहुत से।

९१—तखत-नसीन=सिंहासनासीन। सुख-सानो=सुखित। बखानौ=कहो।

९२—गुमान=अभिमान। आतक=रोब।

९३—परिवार=कुटुब।

९४—पै=पास। आयसु=आज्ञा।

९५—सल्लाह=संधि, मेल। भाजि आयो=भाग आया। आपने=स्वय बादशाह ने। हूनी= (हूण) उजड्ड। कुंवारि= कुमारी, अविवाहित। ताईं =(उसके) वास्ते, लिये। नक मे=थोडे मे।

९६—वक्र=(वक्र) टेढ़े। वत्र वजना=लडाई होना। फेर= बार, दफे। डाला=देवलकुमारी का डोला।

९७—सावंत=सरदार। प्यादे=पैदल। गाजी=धर्मवीर। सारो=सब। मही=पृथ्वी। सुरेस=इन्द्र।

९८—झकाझोर=तेजी से। संसर=तलवार। रुड=धड़। बहे=बहने से।

९९—नाको=अच्छा। गुनौ=समझो। मीच=मृत्यु। नाव=शक्ति, सामर्थ्य।

१००—काढ़ी = निकाली। दीन मुहम्मद = मुसलमानी धर्म। खीन = क्षीण।

१०१—मतग = हाथी। सत सहस = सौ हजार। अनुसरु = करो। पतंग = फतींगा। जंग = युद्ध।

१०२—अपलोक = बदनामी। वध = मारना। दैव = विधाता, भाग्य।

१०३-गाजी = धर्मयुद्ध-वीर। सहीस = साईस। निज़ु = निश्चय। वाजी = घोडा। चक्कवै = चक्रवर्ती। सिर-ताजी = मुकुट। रन-साजी = रणयुद्ध।

१०६—विरतंत = (वृत्तांत) समाचार। अरज करत = विनय करता है।

१०७—आलम = ससार। आलम-निवाज = ससार के रक्षक। सिरताज = शिरोमणि। गाज = बिजली। दराज = बडा, अधिक। कोप = क्रोध। नजर = दृष्टि। अतंक = भय, आतक। गढ़धारी = किलेदार।

१०८—राते = लाल। गाढ़ो = भारी, प्रबल। खम रागि = खुल्लमखुल्ला, दृढता के साथ।

१०९—खैर = कुशल। आप = अपने। कोटि = करोड।

११०—ओप = चमक। सँवारि = सँवारो, सजाओ। बकसो = देदो। हयवर = श्रेष्ठ घोडे। मतग = हाथी। कूव आरभ का करिय = प्रस्थान करो।

१११—सुमुख = भडकीले चेहरेवाले। समर-अनुरत्त = युद्ध में जिनका अनुराग था।

११२—चलाँके = चतुर। बाँके = टेढे। बंकता = टेढाई। करि = हाथी। तग = बंद। असीले = अमल। हेम = सोना। रजीले = धूल से भरे। गुन-आगर = गुणी। माखैं = रुष्ट होते हैं।

उमंग अंग = अंग में उमंग के साथ। ताजी = (अरब का) घोड़ा। तेजलच्छी = तेज लक्षणवाले, तीव्र। पौन-पच्छी = वायु रूपी पक्षी की तरह। कच्छी = ब०लें। सुलच्छी = सुंदर लक्षणवाले।

११३-कद = आकार, डीलडौल। भीम = भारी। दीरघ = विशाल दँतारे = दाँतवाले। जलधर = बादल। फुहारैं = फुफकारी मारकर जल की धारा फेंकते हैं। उदंड = उच्छृंखल। सुंडादंडनि = सूँड। कुंड = तालाब। सलिल = जल। पग = पैर। मग = (मार्ग) रास्ता। धरनि = पृथ्वी। धुजावैं = हिला देते है। अतोल = अपरिमाण, बहुत। बलधारे = बलवाले। पीलवान = हाथीवान।

११४—जरीदार = कामदार। बन्नात = एक कपड़ा। झूल = हाथी के ऊपर पडा कपड़ा। झंपै = ढकी है। सिरीचंद = श्रीचंदन। ढपै = ढँपा है, सजा है। अँबारी = हाथी के हौदे पर बनी हुई खिडकी-दार कोठरी। हेम = सोना। मडपी = छोटा मंडप, देवस्थान के आगे बनी बारहदरी या दालान। भानु कैसी = सूर्य की सी।

११५—कुंडी = सिर पर की लोहे की टोपी। कौच = कवच। झिलिम्मैं = कवच। घटाटाप = बहुत बडी। पेटी = कसने के बंद। अभंग = अखंड।

११६—खग्ग = खड्ग, तलवार। खंडा = खाँडा। सेल = एक प्रकार की बरछी। नेजा = भाला। तूनीर = तरकस। पूरे = भरे हुए। सूरे = वीर।

११७—जुझाऊ = युद्ध के बाजे। राग मारू = युद्ध के गीत। रंग = जोश, उत्साह। क्रूर = दुष्ट।

११८—धवल = उज्ज्वल, उत्तम। लीन = लिए। पायक = पैदल।

११९—चतुरंग = चतुरंगिणी सेना। रंग ह्वै = उत्साहित होकर। अरजत है = विनय करता है। धाराधर = बादल। भेंट = भेंट।

गैल = गली, मार्ग। अडैल = अडियल, रुक जानेवाला। तरजना = गर्जना, चिल्लाना। धूजत = हिलते हैं। फनीस = शेषनाग। लरजत है = काँपता है।

१२०--तज्जत = तरजते है, चिल्लाते हैं। गलगज्जत = चिग्घाड़ते हैं। गयंद = गजेंद्र, श्रेष्ठ हाथी। दराज = भारी। धुकत = हिलती है। मद मुकत = मद छोड़ देते हैं, गर्व भूल जाते हैं। सुकत = सूखा जाता है। पुहुमि = पृथ्वी। झंपत = छिप जाता है। चपत = चप जाती है, दब जाती।

सूचना—कृपाण छंद में आठ-आठ अक्षरों के विश्राम से प्रत्येक चरण में ३२ अक्षर होते हैं, अंत में गुरु-लघु होता है।

१२१--छार = धूल। खुर-थार = खुर की चोट। तायल = उतावले। तुरंगम = घोडे। बिलंद = ऊँचे। मदध = मतवाले। दिगदंती = दिग्गज। गाज = बिजली। छैल = युवक।

१२३—विरद = प्रशंसा। गलगाजे = गरजने लगे। चपल = चंचल।

१२४—कटक = सेना। पावस = वर्षा।

१२६--रुख = अनुकूलता। पातसाह ...समुदाय—सेना बादल के समान है और बादशाह का इशारा वायु की अनुकूलता है।

१२८—प्रहार = चोट। भटभेरा = मुठभेड। नेरा = निकट मे।

१२६—सुरुख = सुंदर रग का। चाँदनी = चँदोआ।

१३१—गहगह = तेजी से।

१३३—नियराय = निकट आता (देखकर)। तुपक = छोटी तोप।

१३६—साँप छछूँदर की गति = सर्प छछूँदर को चूहे के धोखे पकड़ लेता है, पर उसे न तो खा ही सकता है न छोड ही सकता है। खाने से वह मर जाता है उगलने से अधा हो जाता है।

१४०--विग्रह = युद्ध। फरमान = आज्ञा देना।

१४३--अनंत = शेषनाग ।

१४४—सुचि = पवित्र, उचित ।

१४५—अजीत = अजेय ।

१४६--जथारथ = यथार्थ, वास्तविक । दधीचि = एक ऋषि, जिन्होंने इंद्र को वज्र बनाने के लिये अपने शरीर की हड्डी दे दी थी। सिवि = इन्होंने कबूतर को बाज से बचाने के लिये अपने शरीर का सारा माँस तोल दिया था। जगदेव = इनका नाम राजपूताना, गुजरात, मालवा आदि देशों में वीरता और उदारता के लिये प्रसिद्ध है। ये परमार-वंशी कहे जाते हैं। कलि कीरति अमान कै = कलियुग में अत्यत कीर्ति करके। अकारथ = व्यर्थ।

१४७—सब भावै = सब भाव से, सब प्रकार से। परबी = पर्व, पुण्यकाल ।

१४८—घमसान = घोर युद्ध। बितुंड = हाथी। रुंड = धड़। रज = धूल। श्रोनित = शोणित, खून। सूरज-मंडल बेधि = रण में मरे वीर सूर्य-मंडल को बेधकर स्वर्ग पहुँचते हैं।

१५२—जुहारे = प्रणाम किया। उदार = भारी। सगर = युद्ध।

१५५—बलगत = बलबलाते हुए।

१५६—बरियाई = बरबस, जबरदस्ती।

१५८—गुरदा = (गुर्ज) गदा। चहर = चहर की बनी तलवार। गज = बहुत से औजार रखने की खोल। गुबारे = कोई तलवार।

१५६—तुपक = छोटी तोप। जरजाल = (ज्वालाजाल) एक प्रकार की तोप। जमूरे = (फा० जमूरक) एक प्रकार की छोटी तोप। भार = बोझ। तान = छोड़ने के सामान तीर, गोली आदि। बलपूरे = बल से युक्त।

१६२—धूम-धाम = धुएँ का समूह। धुंधरित = धुँधला। सूझना = दिखाई पड़ना। अरुझै = उलझ जाता है। तोड़े = बंदूकें।

धमंकैं = घम्म घम्म शब्द होता है। धुव = सबसे ऊँचे। धमंकैं = धमकते हैं, शब्द होता है। तडपै = गरजती है। तडित = बिजली।

१६३—फनी = शेष। फुलिंग = स्फुलिंग, अग्निकण। सरसत हैं = फैलते है। कतार = पंक्ति। केतुतारे = पुच्छल तारे का। तोपै = ढकती है। अंबर = आसमान। भरसत हैं = (भर्त्सना) छोडते हैं।

१६४—बजोर = जोर-सहित, तेजी से। महताब = महताबी, मसाल। रंजक = तोप की वह प्याली जिसमें बारूद रखकर जलाई जाती है। उस बारूद को भी रंजक कहते हैं। तोर = तडप। गुरु = भारी।

१६६—प्याले = तोप के प्याले (बारूदवाले)। दामिनी = बिजली। दमंकैं = चमकती हैं।

१६७—पाखान = (पाषाण) पत्थर। केतिकौ = कितने ही।

१६८—गिराखाना = उलटना, चक्कर काटकर पलटना। परे = घुसे।

१६९—लटे = टूट-फूट गए। टोक = (स्तोक) थोडा। कुंडी = लोहे का टोप। तनत्रान = कवच।

१७२—रुचिर = सुंदर। राच्यो रंग = साज सजाया (नाचने का)। सुगंध = सुगंधित। मैनका, मंजुघोषा, रंभा = ये स्वर्ग की अप्सराएँ हैं। ताल = नाचने या गाने में हाथ बजाना। गति = ताल और स्वर के अनुसार अंगों को हिलाना। सात सुर = स, रि, ग, म, प, ध, नि,। तीनि ग्राम = सातों स्वरों का समूह, ये तीन षड्ज, मध्यम और गांधार है, इनका नाम नंद्यावर्त, सुभद्र और जीमूत भी है। पायल = पायजेब।

१७३—बारवधू = वेश्या। ताल = मँजीरा। हीनो = कमजोर।

१७४—राग षट = भैरव, कौशिक (मालकोस), हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ ये छः राग है। तान उनचास = संगीत दामोदर में ४९ प्रकार की तानों का वर्णन है। कोटि = (कूट) ४९ तीनों से ८३०० कूट

तानें निकलती हैं। बट=प्रकार। बार-अगना=वेश्या। अतंक=भय।

१७५—बलगंत=बकते हैं। दहपट्टों=नष्ट कर दूँ।

१७८—नटी=वेश्या। ओट=आड़।

१७६—गोसा=धनुष की कोटि। जोई=देखकर। रोदा=प्रत्यंचा। फोंक=तीर का दूसरा किनारा। चाप=धनुप। कसीस भरि=खिँचाव करके।

१८०—गहीली=ग्रहण किए हुए। पट-ओट=वस्त्र की आड़। काम-अबला=रति। लोट=हावभाव। कौंधा=बिजली।

१८१—सावस=शावाश, साधुवाद।

१८२—मंड्यो=ठाना।

१८८—निरतन=(नृत्य) नाचने। कटा करना=काटना।

१९३—अरध-चद=एक प्रकार का वाण जिसके अग्रभाग पर चद्राकार नोक होती है।

१९६—लूक=उल्का। हूक=हूल, पीडा। जोहत=देखते हैं। जके-से=चकपकाकर। सुकुर=(शुक्र) मगल। कलाधर=चद्रमा।

१९७—को=कौन। धार=सेना। खैर=मगल। खालिक=ससार। खुदाय=ईश्वर। सद्राह को=सन्मार्ग की रक्षा के लिये। फनाह=(अ० फना) नाश, मरण।

१९९—अत्र=(अस्त्र) हथियार।

२००—बर=बल या श्रेष्ठ।

२०२—पीर=देवता।

२०५—पाथर=पत्थर।

२०७—कटा=कत्ल, काट। खूटना=कम होना।

२०९—प्रचारि=ललकारकर।

२११—अँगै = सहता है। निदान = अंत में। भय-भीनो = भयभीत।

२१२—चक्र = एक अस्त्र। मोट = बोझ, गठरी। लाडिल पठानी के = पठान। मीन = मछली। दिसि = ओर।

२१३—जादे = पुत्र। सकाना = डरना। वलित = घिरा हुआ। वितुंड = हाथी। महिष = भैंसे। वराह = शूकर।

२१४—थिरे = स्थिर। जार = (जाला) झाडियों आदि से घिरा गंदा स्थान। करी = हाथी। खिरे = खिन्न। मुगलद्दल = मुगलों की सेना।

२१५—निसान = बाजे।

२१६—धनी = स्वामी। हद्द = सीमा, मर्यादा। पति = प्रतिष्ठा।

२१७—हमारो खेत रह्यो = हमने मैदान मारा।

२२०—ब्याज = बहाना।

२२१—हय = घोडा। बहारि = फिर।

२२२—सिरे = श्रेष्ठ। साल = शल्य।

२२३—निसान = झंडे।

२२५—सिरोपाव = वस्त्राभरण।

२२९—दारू = बारूद।

२३१—ध्रुव = निश्चय। कूट = शिखर। दंड = घडी। विहडि डारयो = नष्ट कर दिया। अखंड = समस्त। चंड-व्रात = प्रचंड वायु। विहद = बडे-बड़े। पब्बै = पर्वत।

२३२—तोर = तीव्रता, तेजी।

२३४—फते = विजय।

२३६—सलाही = राय। बरियाई = बरबस।

२४०—साविको = सामना।

२४१—जोर पर्‌यो = बढ गया, प्रचड हो गया।

२४४—चंत्र वजाग=युद्ध का ठान ठानकर।

२४८—तनत्रान=कवच। झिलिम=लोहे का टोप।

२५०—तात=पिता।

२५२—वित=वित्त, धन।

२५४—उवार=उद्धार।

२५५—कंकालिनि=मरकुटही। घरघालिनि=घर को कलंकित करनेवाली। नाहर=सिंह ने।

२५६—छबि-ऐन=छवियुक्त।

२५७—उमत्थै=मथे, स्नान आदि करे। उलत्थै=छा जाय। काँचा वचन=कच्ची बात, कुल को कलंकित करनेवाली।

२६०—रुद्र=महादेव। अहि=सर्प।

२६१—तौर=ढंग। भीर=डर, आशंका।

२६५—नकीब=वंदीजन।

२६७—लौन=नमक। एकौ अंक=किसी प्रकार।

२६८—जार=उपपति।

२७३—सकति=शक्ति, देवी।

२७६—तारॉ=तीर, बाण। सलॉ=भाले।

२८१—तेगॉ मुक्ख मुवन्न=तू तेग के द्वारा मरे। दीधें=दी। गुवन्न=गावें।

२८२—जूझै=युद्ध में मरे।

२८३—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण (।।ऽ) होते हैं।

२८४—सार=हथियार। सरसैं=शोभित होते हैं।

२८५—वरुत्थ=समूह। वलगैं=कोलाहल करते हैं।

२८७—गनीम=शत्रु। अरुझैं=उलझ जायें।

२८८—निसान=झंडे। जौहर=राजपूतों का प्रसिद्ध व्रत जिसमें

पुरुष संकट के समय केसरिया बाना पहनकर युद्धक्षेत्र में लड़ मरते हैं और स्त्रियाँ कोट में जलकर भस्म हो जाती हैं।

२६१—मोतीदाम के प्रत्येक चरण में चार जगण (।ऽ।) होते हैं।

२६२—सजोम=उत्साह सहित। जकंदन=कूदते हुए। करवाल=तलवार।

२६३—झुको=लटकती हुई। ओप=कांति।

२६५—मंड=शोभित हैं। कर=किरण।

२६७—गहर=(सं० गह्वर) प्रबल। गनीम=शत्रु। गारव=गौरव। झुकारि=झोंके देकर गिराना, दूर करके।

२६८—धुरवान=धूम के स्तंभ। अत्र=अस्त्र। छनदा=बिजली। घुरै=गरजती है। लूकै न=दिखाई नही देता।

२६६—निरतें=नाचते हैं। गाजें=गरजते हैं।

३००—हत=आहत, चोट खाकर। तरनी=नाव।

३०१—धनाधीस=कुबेर।

३०३—चंपे=दबाने से।

३०४—पायक=पैदल।

३०६—खडा=खाँड़ा। सक्ति=बरछी। चाप=धनुष। वंके=बाँके। निसंके=निर्भय। जुझारे=लडाके।

३०७—बीर बाजे=लडाई के बाजे। बाजे=लडे। जंगे=युद्ध के। उमाहैं=उत्साहित होते हैं।

३०८—मातग=हाथी। सक्र=इंद्र।

३०६—आनन=मुख। ओप=काति।

३११—सेखी=गर्व। विनद=आवाज, निनाद। निसान=लड़ाई के बाजे। बाजे=कोई। करसत हैं=खींचते हैं, निकाल लेते हैं। भारथ=महाभारत का युद्ध। पारथ=अर्जुन। भीषम=भीष्म पितामह।

३१२--निदान=अंत में।

३१३—रंजक=बारूद। जलद=जल्दी, शीघ्र। जामिकी=(जामगी) पलीता। बारि=जलाकर।

३१५--गहर=(गह्वर) दुर्गम। गराव=एक प्रकार की नाव। नक=नौका। भान=सूर्य। मरकत=मरमर शब्द करते हैं। सचोट=चोट-सहित, घायल। बिहाल=विह्वल। लरकत=हिलते हैं। रेजा=छोटा टुकडा। बिसिष=बाण।

३१६--छिति=पृथ्वी। दारु=लकडी। मिग=शृंग (बाजा)। परसंग=युद्ध-प्रसंग।

३१८—दाव=दावाग्नि। बिपिन=वन। बितुंड=हाथी।

३१९—जिह=डोर। खूँटे=कम हो गए।

३२०—सजोर=बली। सुमार=गणना।

३२१—सेल=तलवार। बगमेल=मुठभेड। आन=अन्य, दूसरा। पारथ=अर्जुन। भारथ=युद्ध। अमान=अपरिमेय, भारी।

३२२--बितुंड=हाथी। रुंड=धड।

३२३--बिहद=बड़े, भारी। बरूत्थ=समूह। भभकत=खून बहता है। घाइ=घाव।

३२४—कुंडी=सिर पर की लोहे की टोपी। सनाह=जिरह बख्तर। झिलिम=लोहे की बनी एक प्रकार की झँझरीदार टोपी जो लडाई के समय सिर और मुँह पर पहनी जाती है। बरिबंड=बली। रुंड=धड। तुंड=हाथी की सूँड। तलफाइ=चोट से पीडित हो कर। मसान जगाना=मूर्दे की छाती पर आधीरात के समय बैठकर मंत्र जपना। जंग=युद्ध। उमग सरसाइ=उमग बढाकर। हनत=मारते हैं। बिपच्छिन=शत्रुओं को।

३२५—खेत=(क्षेत्र) रणभूमि। मढत तन घाइ=शरीर में घाव होते जाते हैं। अंग=शरीर। सुभट=वीर। तुरंग=घोड़ा।

चहला = कीचड़। पाइ = (पाद) पैर। कुंड = तालाब। रुधिर = खून। रुंड = धड़। रासि = ढेर। भषै = (भक्ष) खाते हैं। खग = पक्षी। जबुक = सियार। समुदाइ = समूह। खग्ग वाहत = तलवार चलाता है।

३२६—लुत्थ = लाश। बरुत्थ = समूह। मत्थ = मस्तक। आमिष = कच्चा माँस। आमिष-अहारी = माँसभोजी। लोहू के अलेल = खून के कीचड में। गलेल देना = किलकारी मारना, क्रीडा करना।

३२७—अरे जे हैं = युद्ध में जो वीर डटे है। दलनि = सेनाओं को। दहपट्टि = नष्ट करके, बरबाद करके। हने = मारे। बाजी = घोडा। बितुंड = हाथी। पीरजादे = वीरों की संतान। अधफारे = अध-कटे। फर = रणक्षेत्र मे। पार भए = एक ओर से दूसरी ओर निकल गए। नेजे = भाले। घूमि = चक्कर खाकर। रेजे = टुकड़े-टुकडे। सरे रजे से = सड़े सूत की तरह। करे करजे हैं = सडे हुए सूत की तरह कलेजे को काटकर टुकड़े-टुकडे कर डाला।

३२८—इतै = इस ओर। उत सों = उधर से। सुहेलैं = लड़ते हैं। सेलैं = एक प्रकार की तलवार। कुलही = लोहे का सिर टोप। तनत्रान = कवच। मचो घमसान = घोर युद्ध हुआ। भए दल भेलैं = सेनाएं घायल हो गईं। लोहु अघायल = खून से लथफथ। हायल = बेहोश। फाग = होली।

३२९—सोर = आवाज। जुत्थ = (यूथ) समूह। लुत्थ = लाश। उलत्थिय = उछलकर गिरते है। कुंड = ताल। श्रोनित = (शोणित) खून से। सुंड = सूँड। हत्थिय = हाथी। असवार = घुडसवार। बिगत बाहन = सवारी से रहित। बिकट = भयंकर। गिरीस = महादेव। गिरिजा = पार्वती। रंगभूमि = रणभूमि। रुंड = धड़।

३३०—घोर घमसान = घोर युद्ध। रोर माची = शोर मचा।

दिस = दिशा । डहडह = डिम-डिम शब्द करके । जूह = (यूथ) समूह । जुग्गिन = योगिनी । जुरि = एकत्र होकर । वहक्कैं = बडवड शब्द करते हैं । ताल देत = ताली बजाते है । दुहक्कैं = दहाड़ मारते हैं । कर = हाथ । कपाल = सिर । ककाली = प्रेतिनी । कौतुक = खेल । गन = (गण) समूह । रुद्र = महादेव । समर = युद्ध ।

३३१—चुचनि = चोच से । चुत्थैं = नोचते है । जम्बुक = सियार । भच्छैं = खाते हैं । प्रतच्छैं = प्रत्यक्ष ही, आँख के सामने । भपैं = खाते हैं । रुंड = धड़ । भज्जैं = भागते हैं । रन = रण मे । पान करैं = खून पीते है । चंडी = रणचडी । गलगज्जैं = किलोल करते है । निहारा = देखकर । जच्छ = (यक्ष) एक प्रकार की देव-योनि । बरैं = वरण करती हैं । कायर = डरपोक । बिमुख भए = भाग खड़े हुए । साका = नामवरी ।

३३२—इकसार = एक सा, बराबर ।

३३३—कुटिल गति = टेढ़ी चालवाली । कोटि = धनुष के छोर । श्रोनित = खून । कढी.. अपार = धनुष के छोर रूपी उद्गम से टेढ़ी चालवाली अपार रुधिर-सरिता बह निकली । मज्जन करत = स्नान करते हैं ।

३३४—मर परे = मरे हुए पड़े है । मत्त दंती = मतवाले हाथी । सुंड-खंडे = सूँड कटे । उभै = (उभय) दोनो । ओर = पक्ष । उभै ओर = दोनो पक्ष, दोनो सेनाएँ । ते = वे । कूल = तट । राजैं = शोभित हैं । प्रचडे = प्रवल, भारी । लसैं = शोभित होती है । लोहू लसै वारिधारा = खून का बहना ही नदी की धारा है । कौंल = (कमल) । कलगी = सिर से गिरी हुई कलँगी । मना.. .. अपारा = रुधिर-धारा मे गिरी हुई कलँगियाँ हा मानो कमल के फूल है ।

३३५—अगभंग = कटे-फटे शरीर मे । तुरग = घोडा । तिरैं = तैरते है । ग्राह = मगर । तिर ..एकएक = अगभंग पडे हुए

घोड़े ऐसे जान पडते हैं मानों उस रुधिर-सरिता में एक दूसरे को पकड़ कर मगर तैर रहे हों। रुंड=धड़। पाज=बाँध। सेवाल=सेवार। मनो...जूटे=कटे हुए सिरों के बाल ऐसे जान पडते हैं मानो उस नदी मे बाँध के स्थान का आश्रय पाकर सेवार उग आई हो (बाँध के पास किनारे पर पानी स्थिर हो जाता है इसी से वहाँ सेवार उग आती है)।

३३६—खग्ग=(स० खड्ग) तलवार। खडा=खाँडा। दुधारे=दुतरफा धारवाले शस्त्र। व्याल=सर्प। कारे=काले। फिरैं ....कार=रण में वीरों के हाथ से गिरी हुई तलवारें तथा अन्य शस्त्र ऐसे जान पड़ते हैं मानों रक्त नदी में काले सर्प घूम रहे हों (कवि-परपरा में तलवार का रंग काला माना गया है, इसी से 'व्याल कारे' लिखा है)। तनंत्रान=कवच। जत्र=(यत्र) मशीन (नौका आदि)। जाल=समूह।

३३७—बहै बस्त्रफेन=उस रुधिर-धारा में बहते हुए (उज्ज्वल) वस्त्र ही मानों नदी में उठा हुआ फेन हो। अत्र=(अस्त्र) फेंककर मारे जानेवाले हथियार। मीन=मछली। फसे अस्त्रमान=रुधिर में फँसे हुए अस्त्र मानों मछली हो। मक्र=(मकर) मगर। सूर=(शूर) वीर। सावत=बहादुर। पीन=मोटे, स्थूलकाय। महा... पीन=रणभूमि मे पड़े हुए मोटे-मोटे शूर-सावत उस नदी के बडे-बडे मगरों के समान हैं। घोर=तीव्र, भीषण। गिरे गर्व-वृच्छ=गर्वरूपी वृक्ष इस धारा के वेग से गिर पडा है।

३३८—भौंर=(भ्रमर) जल म उठनेवाला आवर्त। भीम= भयकर, भारी। चक्र=एक गोल हथियार। कलथ्यंत=व्यथा से लोट-पोट होनेवाले। तरग=लहर। ललाम=सुदर। कलथ्यत... ललामैं=व्यथा से शूरों का लोट-पोट होना उस नदी की तरगें है। कपाली=महादेव। पान=जलपान एव रुधिर-पान। तृपावत= प्यासे।

३३९—भिरे=लड़े। गात=(गात्र) शरीर। भरे गात धोवैं=भली भाँति अपना शरीर धोते हैं। कलोलैं=क्रीडा करते हैं। ताप=गर्मी। ताप खोवैं=अपनी गर्मी दूर करते हैं। कोक=चक्रवाक। परैं...जूटे=आकाश से टूट पडनेवाले गृद्ध ही मानों शोकरहित होकर उस नदी के तट पर एकत्र रहनेवाले चक्रवाक और हंस हैं।

३४०—भीम=भीषण। गभीर=गहरी। कम्मान=धनुष। लीनं=लिया।

सूचना—३३३ से ३४० तक उत्प्रेक्षा से पुष्ट 'सांगरूपक' है।

३४१—गहि=पकडकर। कर=हाथ। तानि=खींचकर। इमि=इस प्रकार। सर=तालाब। वारिधार=पानी की धारा। जिमि=समान। दल=सेना। फेरि=पुन। कोऊ=कोई भी। वाग=घोड़े की रास। छिति=रणभूमि। जडगति=जड़ पदार्थ की भाँति, स्थिर। श्रोणित=(सं० शोणित) खून। अन्हाय=स्नान करके। हायल=घायल, बेकाम। जकि=चकित होकर। थकि रहे=स्थकित हो गए, स्थिर रह गए।

३४२—भूर=(भूरि) बहुत, अनेक। करनी=कार्य, कर्तव्य। रनखेत=रणक्षेत्र। संगर=युद्ध।

३४३—सर=वाण। विकल=व्याकुल। दल=सेना। गहि=पकड़कर। पर्‍यो=प्रविष्ट हुआ। ज्यों=समान।

३४४—नाग=सर्प। खगराज=गरुड़। ज्यों=जैसे। हनै=मारता है। गलगाजै=गरजता है।

३४५—करवाल=तलवार। हँकारि=ललकार। दलं=सेना को। दहपट्टि=चौपट करके। महि=पृथ्वी पर। जुग=दो। विहंडि=(विखंडि) खंड करके, काटकर। जनु=मानों। वंडि दिए=बाँट दिया।

३४६—करैं रनरंग=रण में रंग करता है, वीरता दिखलाता है।

चरै=खा जाता है। केहरि=सिंह। कुरंग=हरिण। कलत्थ= कलप कर, पीड़ित होकर। मत्थ=माथा, सिर। पग=(स० पद)। हत्थ=(हस्त) हाथ।

३४७—अघायल=भरे हुए, लथफथ। चायल=चाव। चाय लच्चूर=चाव में चूर, अभिलाषायुक्त। तनत्रान=कवच। लटे= शिथिल हो गए, मुरझा गए। रिपुरंग=शत्रु का प्रभाव। ओप= कांति।

३४८—धावन लगे=दौडने लगे। दारुन=भीषण। कबंध= धड। उदार=प्रशस्त, विशाल। मार=लड़ाई।

३४९—जहीं=ज्यों ही। समसेर=तलवार। मुख फेर दिए= उन्हे पराजित करके भगा दिया। भाजन=भागती हुई। तहीं= त्यों ही। हिय=(हृदय) मन में। हारि गया=शिथिल हो गया, पराजित हो गया।

३५०—जोर पर्यो=प्रबल हो गया। हाँकि हाँकि=दौडा कर।

३५१—जुज्झे=लडे। राम-रावन रन जुज्झे=(मानो) राम और रावण रण में लडे। पारथ=(पार्थ) अर्जुन। कुरुखेत=कुरुक्षेत्र (जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था)। अरुज्झे=लड़े, उलझे, भिडे। गाजि=गरजकर। पुहुमि=पृथ्वी। पुहुमिराय=सम्राट, राजा। युद्ध-काल=युद्ध के समय। सँहार्यो=मारा। गरब गंज्यो=गर्व तोड दिया। तिमि=उसी प्रकार। सूरन सजे=वीरों से सुसज्जित। निरतत=नाचते है। नारद=एक ऋषि जो झगडा लगाने के लिये प्रसिद्ध हैं, यहाँ झगडे का स्वरूप। डिमि-डिमि=डमरू की ध्वनि।

३५२—घमसान=युद्ध। खेत=रणक्षेत्र। सिगर=सब। काम आया=मारा गया। नषत=(नक्षत्र) तारे। भोर=प्रात काल। नषत ज्यों भोर के=प्रात.कालीन नक्षत्र की भाँति तेजहीन हो गए।

३५३—दल-बल = सेना। सान गँवाइ = प्रतिभा नष्ट करके। बर = श्रेष्ठ। सिर नाइ = सिर नीचा करके, लज्जित होकर। पील = हाथी। जित तित लखत = इधर-उधर देखता हुआ।

३५४—ऐसे = इस प्रकार। बधिक = शिकारी। बदन = मुख। सनमान = संमान किया।

३५५—झुके सीस = मस्तक नमित हुए, वे लज्जित हो गए। सस्तर = शस्त्र। सस्तर डार = हथियार रख दिए। मग = मार्ग। मनमार = उदास।

३५६—रग = उमग, उत्साह। निसान = झडे।

३५७—फते = विजय। राय = हम्मीरराय। खेत = रणक्षेत्र में। झारन लागे = तलवार चलाने लगे। निसान = झडे। झुके निसान = शत्रु के झडे नीचे हो गए, शत्रु पराजित हो गया।

३५८—बिधि = ईश्वर। केहूँ = किसी ने भी। तुरतै = तुरत ही। महल तें बूझी = राजमहल से समाचार पुछवाया। अनसूझी = अज्ञान की बात, अविचार की बात।

३५९—काट-दिसि = गढ की ओर। लखावे = दिखाई पडते हैं। जस लीन्हा = विजय प्राप्त की।

३६०—आन = (अन्य) दूसरा। दिसि = ओर। निसान = झडे। रिपु = शत्रु। फते = विजय। खेत = रणभूमि। बरियाई = बलपूर्वक।

३६१—कर = का। करिबो = करना। तौन = वह। सनान = स्नान।

३६२—गुनि = विचार कर। रनिवास = रानियो के रहने का महल। जौहर = राजपूतो का सकटापन्न अवस्था में मर मिटने का व्रत (देखो छद-सख्या २८८ का नोट)। विधि-अनरथ-परकास = चौपट होने का आरभ।

३६४—खंड = टुकड़ा । कटारी खाय = कटारी मारकर। केतिक = कितनी ही । दारू = लकड़ी । दारू = बारूद । जोर = अधिक ।

३६५—परीं = गिरीं । गिरि = गिरकर । गिरि = पर्वत से । गेह = घर ।

३६६—बेरि = देर। उलट्यो = लौटा । दल फेरि = शत्रु की सेना को भगाकर ।

३६७—जंग = युद्ध । गहगह = तेजी से । निसान = बाजे ।

३६८—कुलाहल = शोर । बिरतत = (वृत्तांत) समाचार । बखान = वर्णन ।

३६९—सहस्र = हजार । निसान = झंडे ।

३७०—स्रवन = कान । गहि मौन = मौन धारण कर, चुपचाप । बिधि-परपञ्च = ईश्वर की करतूत । न परत लखायो = जाना नहीं जाता ।

३७२—करैहै = करावेगा । चाही = चाहा, इच्छा की । तौन = वह ।

३७३—श्रीपति = विष्णु । बिरचि = ब्रह्मा। पचि हारे = प्रयत्न करके थक गए । कोटि = करोड़ । किन = क्यों न । बरबस = जबर्दस्ती, अवश्य ।

३७४—पावक = अग्नि । पौन = (पवन) वायु । हरतार = हर्ता, नाशकर्ता । करतार = कर्ता । लेषिए = समझिए । अंगिरा = एक ऋषि । सनक सनंदन सनातन = तीनों ब्रह्मा के पुत्र हैं । बिसेषिए = विशेष रूप से समझिए । सुरेस = इंद्र। अवरेषिए = गिनिए, जानिए । ईस = महादेव । अनंत = विष्णु । बिधि = ब्रह्मा ।

३७५—आगम = शास्त्र । निगम = वेद । लहत न = पाते नहीं । बलवत = बली ।

३७६—चर = चैतन्य । अचर = जड़ ।

३७७—करन = करनेवाला । अखेद = खेदरहित । निरबेद =
संसार से विराग ।

३७८—समर-जीत = युद्ध में विजय । सदन = घर में । प्रर-
पंच = कार्य, कर्तृत्व । निरधार = निश्चय । रंच = थोड़ा सी ।

३७९—बस = अधीन । और = अन्य । स्वबस = अपने अधीन ।
निहचै = निश्चय । विवेक = विचार ।

३८०—प्रमान = प्रामाणिक, माननीय । रिपु-भंग = शत्रु का
नाश । राखि लीन्हो = रक्षा की ।

३८१—सबहिन = सबने । तजे परान = प्राण त्यागे । जान =
जाने, नष्ट होने ।

३८२—अहचरज = आश्चर्य । ठाईं = स्थान पर ।

३८३—बहुतेरो = बहुत । उभै = दोनों । जाहि = देखकर ।
तत्वज्ञान = वैराग्य । मोहि = मुझे ।

३८४—इंद्रजाल = जादूगर का खेल । सम = समान । करन-
हार = कर्ता । नट = जादूगर । सरिस = (सदृश) समान । और
को और = कुछ का कुछ । ठौर = स्थान ।

३८५—सिरजनहार = बनानेवाला । सरन = (शरण), आश्रय
में । भार = बोझ । सुत = पुत्र । सिर दैहौं = सौपूँगा ।

३८६—जानि = समझकर ।

३८७—द्विजनि = ब्राह्मणों को । दरिद्र = गरीबी । भूरि =
अत्यत । खलन = दुष्टों को । प्रचंडनि = प्रबलों को । उताल में =
शीघ्रता से । हार = पराजय । अरि = शत्रु । विडारि = बिगाड़ कर,
नष्ट करके । न्याइ = न्याय । निपारि दान = निपटारा कर दिया ।
हाल = समाचार । तात = पिता । सुदरी = स्त्री, पत्नी । अरपि देहौं =
अर्पण कर दूँगा । गिरीस = महादेव । माल = मुंडमाला ।

३८८--काज=कार्य । विषाद=खेद, दुःख । नेक=कुछ, थोडा भी । सोधि=खोजकर, ढूढकर । प्रबोधि=ढारस देकर । प्रसग=कथा, समाचार । बोध देत=समझते है । उछाह=उत्साह । चक्कवै=चक्रवर्ती । ईस=महादेव । छिनीस=राजा । रोर=शोर । दोय=दोनो । अकुलाने=व्याकुल हो गए । अलकेस=कुबेर (दान के कारण)। सुंदरी=अप्सराएँ (वीरता के कारण वरण करने के लिये)। सुरेस=इन्द्र। सदन=घर (इ द्रपुरी)।

३८९--साज=सामान । टीका=तिलक । नीर=जल । असनान=स्नान । दुजात=(द्विज) ब्राह्मण । कर=हाथ । करवाल=तलवार । नीको=अच्छा। दयो=दे दिया । ईस=महादेव । सुरलोक=इंद्रलोक । सची=इ द्राणी ।

३९०—नरनाथ=राजा । सारे=सब । देवबधू=अप्सरा । वर=श्रेष्ठ, बढ़िया । नभ=आकाश । ढुरे=ढुरते है, फेरे जाते हैं । चौर=(चमर) मुर्छल । चहूँ दिसि=चारों ओर । भार=भारी। आनि=आकर । श्रीपति=विष्णु । हरि=विष्णु । सवनहारे=सेवा करनेवाले ।

३९१—अरिदल=शत्रु की सेना । दलमल्यो=नष्ट किया। हरिधाम=विष्णुलोक । धन=धन्य। छिति=पृथ्वी पर। छत्रपति=राजा ।

३९२—माने=पूजा की । दुज=(द्विज) ब्राह्मण । सनमाने=समान किया । हित=प्रेम । पिछाने=पहचाना । सुखमाने=सुखयुक्त, सुखदायक । बाम=स्त्री । धाम=घर । लाले=लालन-पालन किया । बाले=बालक। प्रतिपाले=पालन किया। या पुहमि=यह पृथ्वी । घाले=मारे, नष्ट किया । चाम=चमडा । साका=नामवरी । जसीले=यशस्वी । समर=युद्ध । सुरेस=इन्द्र । फारि=बेधकर । सिधारे=गए । सुरधाम=स्वर्ग । (पुराणों

में वर्णित है कि वीर लोग सूर्यमंडल को बेधकर उसी मार्ग से स्वर्ग जाते है)।

३६४—को = कौन। या = इस। धरती = पृथ्वी। परिहऱ्यो = छोडा।

३६५—बलि-बावन = बलि और वामन की कथा प्रसिद्ध ही है। कुंती करन = कर्ण कुंती के सबसे बडे पुत्र थे, जो सूर्य के अंश से उत्पन्न हुए थे। कर्ण दुर्योधन के पक्ष मे थे, कर्ण ने कुंती के कहने पर यह प्रतिज्ञा की थी कि अपने भाइयो के प्राण कभी न लेंगे। सिवि कपोत = शिवि बडे दानी थे। इन्होंने १०० यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की थी। इंद्र डरा। उसने अग्नि को कबूतर बनाया और आप बाज बनकर उसका पीछा किया। कबूतर रक्षा के लिये शिवि की गोद मे जा छिपा। राजा ने कबूतर के बराबर मांस अपने शरीर से तौल देने को कहा। पर तौलने में सारे शरीर का मास भी कम पड गया, तब ये अपना सिर काटने लगे। तब भगवान् ने प्रकट होकर इनका हाथ पकड लिया और इन्हें स्वर्ग दिया। मीर = महिमा मंगोल। उदोत = प्रसिद्ध, प्रकट।

३९६—छिति = पृथ्वी। भानु = सूर्य। परताप = प्रताप। सों = से, द्वारा। जगत-उज्यारा = ससार को प्रकाशित करनेवाला।

३९७—बहुरि = फिर, पुन.। तनय = पुत्र। जहान = संसार।

३९८—रायसा = वृत्तात। लखि = देखकर। सार = थोड़े में। छंदबद्ध = छंदोबद्ध। सेखर = चंद्रशेखर वाजपेयी (कवि)।

४००—कर = हाथ, दो (२)। नभ = आकाश, शून्य (०)। रस = नवरस (९)। आतमा = आत्मा (१)। 'अंकाना वामतो गति' से संवत १९०२ हुआ।

४०१—राधावर = श्रीकृष्ण। कै = अथवा। श्रीनरेंद्र = पटियाला-नरेश। मृगराज = सिंह। प्रभु = स्वामी। लोक-मति = सासारिक बुद्धिवाला, व्यापक बुद्धिवाला। दूजो = दूसरा।

३८८—काज = कार्य । विषाद = खेद, दुःख। नेक = कुछ, थोडा भी। सोधि = खोजकर, ढूढकर। प्रबोधि = ढारस देकर। प्रसग = कथा, समाचार। बोध देत = समझते हैं। उछाह = उत्साह। चक्कवै = चक्रवर्ती। ईस = महादेव। छितीस = राजा। रौर = शोर। दोय = दोनो। अकुलाने = व्याकुल हो गए। अलकेस = कुबेर (दान के कारण)। सुंदरी = अप्सराएँ (वीरता के कारण वरण करने के लिये)। सुरेस = इन्द्र। सदन = घर (इंद्रपुरी)।

३८९—साज = सामान। टीको = तिलक। नीर = जल। असनान = स्नान। दुजान = (द्विज) ब्राह्मण। कर = हाथ। करवाल = तलवार। नीको = अच्छा। दयो = दे दिया। ईस = महादेव। सुरलोक = इंद्रलोक। सची = इंद्राणी।

३९०—नरनाथ = राजा। सारे = सब। देववधू = अप्सरा। वर = श्रेष्ठ, बढ़िया। नभ = आकाश। दुरैं = ढुरते हैं, फेरे जाते हैं। चौर = (चमर) मुर्छल। चहूँ दिसि = चारों ओर। भार = भारी। आनि = आकर। श्रीपति = विष्णु। हरि = विष्णु। सेवनहार = सेवा करनेवाले।

३९१—अरिदल = शत्रु की सेना। दलमल्यो = नष्ट किया। हरिधाम = विष्णुलोक। धन = धन्य। छिति = पृथ्वी पर। छत्रपति = राजा।

३९२—माने = पूजा की। दुज = (द्विज) ब्राह्मण। सनमाने = संमान किया। हित = प्रेम। पिछाने = पहचाना। सुखसाने = सुखयुक्त, सुखदायक। बाम = स्त्री। धाम = घर। लाले = लालन-पालन किया। बाले = बालक। प्रतिपाले = पालन किया। या पुहमि = यह पृथ्वी। घाले = मारे, नष्ट किया। चाम = चमडा। साका = नामवरी। जसीले = यशस्वी। समर = युद्ध। सुरस = इंद्र। फारि = बेधकर। सिधारे = गए। सुरधाम = स्वर्ग। (पुराणों

में वर्णित है कि वीर लोग सूर्यमंडल को बेधकर उसी मार्ग से स्वर्ग जाते हैं)।

३९४—को = कौन। या = इस। धरनी = पृथ्वी। परिहर्‌यो = छोड़ा।

३९५—बलि-बावन = बलि और वामन की कथा प्रसिद्ध ही है। कुंती करन = कर्ण कुंती के सबसे बड़े पुत्र थे, जो सूर्य के अंश से उत्पन्न हुए थे। कर्ण दुर्योधन के पक्ष में थे, कर्ण ने कुंती के कहने पर यह प्रतिज्ञा की थी कि अपने भाइयों के प्राण कभी न लेंगे। सिवि कपोत = शिवि बड़े दानी थे। इन्होंने १०० यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की थी। इंद्र डरा। उसने अग्नि को कबूतर बनाया और आप बाज बनकर उसका पीछा किया। कबूतर रक्षा के लिये शिवि की गोद में जा छिपा। राजा ने कबूतर के बराबर मांस अपने शरीर से तौल देने को कहा। पर तौलने में सारे शरीर का मांस भी कम पड़ गया, तब ये अपना सिर काटने लगे। तब भगवान् ने प्रकट होकर इनका हाथ पकड़ लिया और इन्हें स्वर्ग दिया। मीर = महिमा संगोल। उद्दोत = प्रसिद्ध, प्रकट।

३९६—छिति = पृथ्वी। भानु = सूर्य। परताप = प्रताप। सों = से, द्वारा। जगत-उज्यारा = संसार को प्रकाशित करनेवाला।

३९७—बहुरि = फिर, पुनः। तनय = पुत्र। जहान = संसार।

३९८—रायसा = वृत्तांत। लखि = देखकर। सार = थोड़े में। छंदबद्द = छंदोबद्ध। सेखर = चंद्रशेखर वाजपेयी (कवि)।

४००—कर = हाथ, दो (२)। नभ = आकाश, शून्य (०)। रस = नवरस (९)। आतमा = आत्मा (१)। 'अंकानां वामतो गतिः' से संवत् १९०२ हुआ।

४०१—राधावर = श्रीकृष्ण। कै = अथवा। श्रीनरेंद्र = पटियाला-नरेश। मृगराज = सिंह। प्रभु = स्वामी। लोक-मति = सांसारिक बुद्धिवाला, व्यापक बुद्धिवाला। दूजो = दूसरा।

४०२—रावरो = आपका। सिरमोर = श्रेष्ठ, शिरोमणि। द्विज-दीन = गरीब ब्राह्मण। निरखि = देखकर। निरखि आपनी ओर = अपने बड़प्पन को समझकर।

४०३—जौ लौं = जब तक। सुरपुर = देवलोक। सक्र = इंद्र। चिरजीव = दीर्घजीवी।
